वर्ष-25 जनवरी-2005 अंक-9

हिन्दी प्रचार वाणी

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के 31वें पदवीदान समारंभ पर डॉ0 सरोजिनी महिषी दीक्षांत भाषण देती

आर विजयलक्ष्मी, आर सत्यलक्ष्मी प्रार्थना करती हुई।

स्वागत भाषण तथा प्रतिवेदन प्रस्तुत करती हुई सुश्री बी.एस.शांताबाई।

डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्ति अध्यक्ष भाषण देती हुई।

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर-18.

मंच संचालन करती हुई डॉ० (श्रीमती) एम.विमला

संदेश वाचन करती हुई डॉ० मिताली भट्टाचार

प्रतिज्ञा वाचन कराती हुई (श्रीमती) विनीता जैन

धन्यवाद समर्पण करती हुई डॉ० (श्रीमती) टी.एस. उपाध्याय

हिन्दी प्रचारकों का सम्मान

पं. रामेश्वर दयाल दुबे पुरस्कार लेते हुए श्री टी.के.हंचाटे, मुधोल

सुश्री बी.एस.शांताबाई पुरस्कार लेती हुई श्रीमती डी.शीलवतीबाई कुरुगोड तथा श्रीमती सलीना एस. पीटर, हुबली

समिति द्वारा सम्मानित प्रचारक

श्री गणपति सत्यनारायण भट्ट, मुनवल्ली श्री केशवराव मुंडेराव करकाले, बीदर श्री नागेश ए. यत्नाल, गुलबर्गा श्री एस. बी. गुडगेरी, हरपनहल्ली

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

हिन्दी प्रचार वाणी

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की मासिक मुख-पत्रिका

वर्ष–25 अंक–9
जनवरी – 2005

साहित्य वाचस्पति
स्व. डॉ0 पी.आर. श्रीनिवास शास्त्री
पत्रिका के संस्थापक

साहित्य वाचस्पति
सुश्री बी.एस.शांताबाई
प्रधान–संपादिका

साहित्य वाचस्पति
डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्ति
गौरव–संपादिका

प्रकाशक
कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति
178, 4था मैन रोड, चामराजपेट
बेंगलोर–560 018
फोन : 26617777

गृह मंत्रालय (भारत सरकार) के राजभाषा विभाग के
पत्रांक 11014/8/96 रा.भा.प. दिनांक 28-10-96 के अनुसार
सभी सरकारी मंत्रालयों, विभागों और प्रतिष्ठानों में खरीदे जाने के लिए अनुमोदित

अन्य ग्राहकों के लिए वार्षिक चंदा	प्रमाणित प्रचारक वार्षिक चंदा	(प्रमाणित प्रचारकों को मुफ्त में हर माह, पत्रिका भेजी जाती है)
रू. 60/-	रू. 30/-	

✡✡✡✡✡ विषयानुक्रमणिका ✡✡✡✡✡

संपादकीय ....

सर्वे भवन्तु सुखिनः

नये साल का उदय हो गया है। सन् 2005 ने पदार्पण किया है। हर साल जनवरी पहली तारीख को मित्र बान्धवों में शुभकामनाओं का आदान-प्रदान होता है, घर की सजावट होती है, कहीं-कहीं प्रीतिभोज भी होते हैं, और मौज मनायी जाती है। बड़ी उम्मीद के साथ लोग नये साल का स्वागत करते हैं। सब की यही कामना होती है कि नया वर्ष शुभप्रद हो। वर्षारम्भ में ये सब होते हैं। कालचक्र की तेज गति में 365 दिन एक के बाद एक फिरने लगते हैं और वर्ष का अंत भी हो जाता है। तब दुनिया की साल भर की गतिविधियों का पुनरावलोकन किया जाये तो कहीं दारुण, कहीं भयंकर, कहीं दयनीय, कहीं विषादपूर्ण दृश्य ही सामने आते हैं। सन् 2004 तो समाप्त हो गया है परन्तु देश-विदेशों में कितनी उथल-पुथल मच गयी-यह तो हम सबने प्रत्यक्ष देखा है, सुना है या पढ़ा है। एक ओर तो दुर्भिक्ष, भूकंप, बाढ़, सुनामी जैसे प्रकृति प्रकोप से पीड़ित दीन-दुःखियों का करुण क्रन्दन, दूसरी ओर धर्म के नाम पर असहिष्णुता, शिक्षण के क्षेत्र में पक्षपात, राजनीतिक क्षेत्र में अत्याचार, बस, इस सूची का कोई अंत ही न होगा। ये सब तो हर साल हर कहीं अपरिहार्य रूप में होते ही रहते हैं। जब से मानव समाज की सृष्टि हुई तब से मानव कल्याण में रोड़ा डालने वाली बातें होती ही रहीं और हो भी रही हैं। काल के प्रवाह में ये विस्मृत हो जाती हैं, फिर नये साल का प्रारंभ शुभकामनाओं के साथ होता है।

हमारे देश के सर्वोन्नत आदर्श 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को आज मानव भूल गया है। फलस्वरूप समाज में भेदभाव, आर्थिक विषमता, घोर गरीबी, धार्मिक असहिष्णुता, दलितों का शोषण आदि दिन-ब-दिन बढ़ रहे हैं। आज का मानव स्वार्थ भावना के कारण राष्ट्र को भूल गया है। वैदिक काल के ऋषि-मुनियों ने समाज की और देश की भलाई के लिए कई उपदेशात्मक मंत्रों को अभिव्यक्त किया है। 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्', 'सहृदयं सांमनस्यं अतिद्वेषं कृणोमि वः' इत्यादि सहस्रों वाक्यों से हमारे पूर्वजों ने मार्गदर्शन किया है। हमारे ही राष्ट्रकवि मैथिलिशरण गुप्तजी, दिनकर, निराला आदि देशप्रेमी कवियों की प्रेरणाप्रद वाणी को हमने सुना भी है। समस्त दुनिया को सुरम्य, सुखद, शांतिपूर्ण पुष्पवाटिका बनाने की शक्ति एक व्यक्ति में नहीं हो सकती। 'मैं' और 'तुम' भावना को दूर करके 'हम' भावना से स्नेह, प्रेम व समन्वय के आदर्शों का पालन अपनी ही सीमित परिधि में करते रहें तो कुछ हद तक देश में सुख-संतोष व्याप्त रहेगा।

जो भी हो, अब नूतन वर्ष का प्रारंभ हुआ है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु' इस शुभकामना के साथ हम नये साल का स्वागत करके वर्ष भर समस्त जीवराशि को सुख बाँटते रहने का संकल्प करें। भगवान से प्रार्थना है कि हमारी इस मंगलकामना को सुनकर सब को सुखी रखें।।

"नूतन वर्ष की शुभकामनाएँ"

–डॉ० (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्ति

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलोर के तत्वावधान में आयोजित इकतीसवें पदवीदान समारोह में पूर्व संसद सदस्य (राज्य सभा) पूर्व केन्द्र मंत्री, संसदीय हिन्दी परिषद् नई-दिल्ली की अध्यक्ष डॉ0 सरोजिनी महिषी जी का दीक्षांत-भाषण

दि.19 दिसंबर 2004

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की माननीय अध्यक्षा जी, उपाध्यक्षा जी, प्रधान सचिव जी, कार्यकारिणी तथा अन्य समितियों के माननीय सदस्यगण, स्नातकगण, निमंत्रित सज्जनों, देवियों तथा उपस्थित पत्रकार बंधुजनों-

बड़ी प्रसन्नतापूर्वक मैं आपके पास इस पदवीदान समारोह में आयी हूँ। पिछले साल सुवर्ण महोत्सव में आपने मुझे बुलाने का कष्ट किया। किंतु कई कारणों से मैं आ नहीं सकी। इस बार अवसर प्राप्त होते ही मैंने स्वीकार किया। पढ़ने वाले विद्यार्थीगण, पढ़ाई पूरी करके कार्यक्षेत्र में निकलने वाले स्नातकगण, अध्यापकगण, स्नातकों के पालक इन सबको एक साथ मिलने का अवसर दीक्षान्त समारोह में मिलता है। भगवत्पूजा के अंत में भगवान को फल, नैवेद्य अर्पण करके उस फल के टुकड़े को जैसे भक्तों को बाँटते हैं वैसे ही इस दीक्षान्त भाषण में चार शब्द भी स्नातकों में बाँटे जाते हैं। इन शब्दों को कहने वाला कितनी आत्मीयता से कहता है और सुनने वाला कितना आत्मसात् करता है, यह कुछ समय के बाद उन्हीं को मालूम होता है।

विश्वविद्यालय से जो पदवी लेता है उसको आङ्ग्ल भाषा में "ग्रेजुएट" बोलते हैं। विज्ञानशाला में जो लोटा प्रयोग में लाया जाता है उसको अंग्रेजी भाषा में "ग्रेजुएटिड् जार" बोलते हैं। इसका अर्थ होता है नापने का पात्र। विश्वविद्यालय से पदवी लेकर बाहर निकलने वाला ग्रेजुएट किस वस्तु को नापने का साधन है ? देश की संस्कृति को, आचार-विचारों को जीवन पद्धति को नापने का साधन है। विद्या के सागर में जो स्नान करके निकलता है वह स्नातक है। पदवी से सन्नद्ध होकर स्नातक जनता की सेवा करने के क्षेत्र में पदार्पण करता है।

भारत महान देश है। इसकी भौगोलिक समस्याएँ अलग-अलग हैं। एक तरफ ऊँचा पर्वत है, एक तरफ खड्डा, एक तरफ नदी बहती है, एक तरफ समुद्र के नजदीक पत्थर पर खड़े रहकर सूर्य के उदयास्त देखने के लिए भीड़ लगाने वाले सहृदयगण।

एक तरफ समुद्र में मछली पकड़ के बेच कर, जीवन चलाने वाले मछुवारे! दूसरी तरफ इन सब लोगों की अपनी अपनी भाषाएँ हैं। माता ने अपने बच्चे को दूध के साथ बोलने की कला भी दे दी है।

राष्ट्र में एक दूसरे की भावनाओं को, विचारों को समझ लेने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है। अंग्रेजों ने शासन के साथ-साथ अपनी भाषा भी राष्ट्र पर थोप दी, उन्होंने अंग्रेजी सिखाने का प्रबंध भारत में किया। किन्तु अंग्रेजी में अपने विचारों को व्यक्त करने वाले आज भी पाँच प्रतिशत से कम हैं किन्तु अंग्रेजी जानने वाले व्यक्ति अपने को समाज में बहुत ऊँचा समझते हैं। बच्चा अंग्रेजी शब्दों से माँ-बाप को पुकारता है तो उन्हें बड़ी खुशी होती है। अंग्रेजी संस्कृति के मुताबिक मोमबत्ती को बुझाकर बच्चे का जन्मदिन मनाते हैं, उससे सबको बहुत खुशी महसूस होती है।

भाषा और संस्कार परस्पर पोषक हैं। यह सिद्ध होने में पीढ़ियों का समय व्यतीत होता है। भारत देश पर अंग्रेजी शासन का और अंग्रेजों के संस्कार आज भी प्रभावशाली हैं। इसको धीरे-धीरे दूर करने के लिये महात्मा गांधी ने 1924 में "दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा" का संस्थापन मद्रास में किया। इतिहास पढ़कर परीक्षा में पास होना अलग बात है तथा इतिहास का निर्माण करना अलग है। गाँधी जी ने इतिहास निर्माण करने का कार्य उस समय प्रारम्भ किया था।

अरबी, फारसी और उर्दू एक जमाने में शासकों की भाषा बनने की वजह से उसका असर छावणी भाषा में, खड़ी बोली में परिवर्तित हो गया। आज भी हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा बनी किन्तु राष्ट्रीय जीवन के विकास को प्रतिबिंबित करने के लिए शब्द संपत्ति काफी न होने के कारण, भाषाओं की जननी संस्कृत से बड़ी संख्या में शब्दों को हिन्दी साहित्य में लेना पड़ा। अगर उर्दू शब्द या अंग्रेजी शब्द दिन प्रतिदिन के व्यवहार में प्रचलित है तो उसे अपनाने में कोई आपत्ति नहीं है। रेल के सिग्नल को "अग्निरथ आगमन निर्गमन सूचक- लोहपट्टिका" इस तरह हिन्दी शब्द रखने में बोलने वाले को और समझने वाले को कठिनाई होगी और उसका लाभ किसी को नहीं मिलेगा।

इसीलिए अंग्रेजी, उर्दू इत्यादि भाषाओं के कई शब्द हिंदी में आ चुके हैं उन्हें लेना पड़ता है।

दक्षिण भारत के लोग समुद्र से घिरे हुये प्रदेश में रहते हैं। इसलिए, नीर, मीन इत्यादि शब्द उनके नित्य जीवन में आ चुके हैं। डॉ0 काल्डवेल एक मिशनरी थे। उन्होंने द्राविड भाषाओं का अध्ययन करके "History of Dravidian

Lingustics" शोध ग्रन्थ लिखा है सारी द्राविड़ भाषाओं में ये दोनों शब्द और भी कई शब्द, अलग-अलग रूप धारण करके आये हैं। "तण्णीर, वेन्नीर, इब्बनि" जैसे नीर के रूप वैसे मीन, मिनगु, मिन्चु, मिन्सार-वल्ली इत्यादि शब्द चमकने वाले मीन के अलग-अलग रूप हैं।

विमान अड्डे के लिये, सुसंस्कृत रूप, "विमानपट्टनम" लिखा गया है। एयरपोर्ट को लोग जल्दी समझते हैं। एक भाषा विशेषज्ञ, जिन्होंने इस शब्द को दिया था उन्होंने पूछने पर विवरण दिया विशाखापट्टण, मछलीपट्टण, नागिपट्टण यह सब बन्दरगाह है। इसलिये पट्टन माने पोर्ट होगा यही कारण है कि हमको विमानपत्तन नाम दिया। एक गुजराती मंत्री जो वहाँ खड़े थे, बोले कोई विमानपट्टण नहीं पढ़ते हैं, विमान पतन ही पढ़ेंगे शब्दों के उच्चारण से शब्दार्थ की गलत धारणा नहीं होनी चाहिये। शंका का अवकाश नहीं होना चाहिये।

राष्ट्र की भाषा राष्ट्रीय जीवन को प्रतिबिंबित करने की क्षमता रखती है। जीवन जैसा विकसित होता जाता है वैसे भाषा भी विकसित होती जाती है।

भौगोलिक भिन्नता से शब्दों के उच्चारण में फर्क होता है। इसलिए प्रदेश के भिन्न-भिन्न भागों में "बोली" नाम से कई बोलियाँ केवल बोलने में प्रचलित हैं। उत्तर भारत में हिन्दी समझनेवालों की संख्या बहुत बड़ी है। हिन्दी की उप भाषाएँ हैं, बोलियाँ हैं। तुलसीदास का रामायण अवधी में है, सूरदास की कृष्ण भक्ति ब्रजभाषा में बहती है। मिथिला प्रदेश की भाषा मैथिली है। पूर्वी उत्तर प्रदेश की भाषा भोजपुरी है। इन सब उपभाषाओं की लिपि नागरी है। जिन बोलियों की कोई लिपि नहीं, वह भी किसी लिपि को अपना सकते हैं।

उत्तर भारत की बड़ी भाषाएँ सारी संस्कृतजन्य भाषाएँ होने की वजह से, संस्कृत का ज्ञान जिनको है उनको इन सारी भाषाओं को समझ लेना कठिन नहीं होता। इन सारी भाषाओं का व्याकरण आमतौर पर एक ही रूप का होता है।

द्राविड़ भाषाओं के व्याकरण अलग हैं। ये सारी भाषाएँ संस्कृत से पोषित भाषाएँ हैं। दक्षिण भारत के लोगों को हिन्दी सीखने में, समझ लेने में कष्ट नहीं है। बोलते वक्त शब्दों का लिंग मालूम नहीं होता किन्तु अर्थ मालूम जरूर होता है। किन्तु उत्तर भारत के लोगों को दक्षिण भारत की भाषाएँ सीखने की इच्छा ही नहीं होती। इंजीनियरिंग या मेडिकल शिक्षा के लिए दक्षिण भारत में पाँच साल रहने पर भी उन विद्यार्थियों पर दक्षिण भारत की भाषा का कोई प्रभाव नहीं दिखांई देता है।

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति से पदवी लेकर नियुक्त हुई मेरी बहिन भारत के किसी हिस्से में सुचारु रूप से सेवा कर सकती है। राष्ट्रभाषा के विद्यार्थियों को कोई भी विषय हिन्दी में सिखा सकती है। किन्तु हिन्दी प्रान्त के शिक्षा शास्त्री को अहिन्दी प्रान्त में हिन्दी सिखाते समय कठिनाई महसूस होती है। लेकिन अहिन्दी प्रान्त का हिन्दी शिक्षा शास्त्री भारत में कहीं भी सेवा कर सकता है।

किन्तु महिला अध्यापिका के सामने कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। सामाजिक कमजोरियाँ जो महिला के बारे में समझी जाती हैं, इन सभी का सामना उसे करना पड़ता है।

अंग्रेज लोग जब भारत में शासन करने आये तब कई शक्तियों को नापने के लिये कई चीजें ले आये। विद्युत शक्ति नापने के लिये मोमबत्ती प्रमाण लाये। पुरुष की शक्ति नापने के लिये घोड़े की शक्ति को प्रमाण माना। किन्तु स्त्री शक्ति का अवतार है। उसे क्या नापना? इस तरह सोच के नापना छोड़ दिया।

शेर पर चढ़ने वाली केवल देवी दुर्गा है। अन्य कोई देवता शेर पर नहीं चढ़ता है। सामाजिक और धार्मिक बन्धन स्त्री को कैद में रखने के लिये किये गये थे। आज समय बदल गया है। लड़की शिक्षा पाने लगी है, उच्च शिक्षा में बहुत सी छात्राएँ ही उच्च क्रमांक पाती हैं। नौकरी करती हैं, धनार्जन भी करती हैं घर का काम भी सम्मालती हैं। क्योंकि वह शक्ति का अवतार है।

बहनों और भाइयों, आपकी सेवा बहुमूल्य होगी, बहन शान्ताबाई ने जो दीप जलाया है, वह प्रज्वल्लित होगा उससे असंख्य दीप जलते रहेंगे, प्रकाश देते रहेंगे।

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

हमारे देश की जनता को प्रकाश की तरफ ले जाने का काम हम करते रहेंगे।

धन्यवाद,

जय हिन्द।

डॉ0 सरोजिनी महिषी जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

शैक्षणिक योग्यता

संस्कृत और कन्नड़ से बी.ए. प्रथम श्रेणी में —बंबई विश्वविद्यालय
संस्कृत और कन्नड़ से एम.ए. प्रथम श्रेणी में —बंबई विश्वविद्यालय
एल.एल.बी.(कानून उपाधि) प्रथम तथा द्वितीय वर्ष —कर्नाटक विश्वविद्यालय में प्रथम
बार कौंसिल परीक्षा —प्रथमतः राज्य से
पीहेच.डी. —"वैदिक काल से 20वीं सदी तक की महिला कवयित्रियों पर।"
साहित्य रत्न (हिन्दी में)
प्रशासनिक कार्य के लिए आठ भारतीय भाषाओं की जानकारी

कार्यक्षेत्र - शिक्षा

ए) बी.ए.उत्तीर्ण होने के बाद विलिंग्डन कालेज सांगली (जो अब महाराष्ट्र में है) में प्रवक्ता और अध्येता के रूप में सेवा।
बी) कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ में लॉ कालेज (कानूनी-महाविद्यालय) में कानूनी प्रोफेसर के रूप में कार्य (1955-1962)
सी) धारवाड़ में प्राइमरी स्कूल, हाईस्कूल और महिलाओं के लिए ट्रैनिंग कालेज चला रहीं हैं।
डी) 15 वर्षों से महिलाओं और शिशुओं के लिए कन्नड़ मास पत्रिका की संपादिका के रूप में सेवा

साहित्यिक क्षेत्र

ए) कन्नड़, हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी में अनेकों विषयों पर कुछ चालीस पुस्तकें लिखी हैं। जिन पुस्तकों को केन्द्र सरकार द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुआ है, उसका अन्य भाषाओं में अनुवाद किया है।
बी) ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत-पुस्तक "रामायण दर्शन" (लेखक-डॉ0 के.वी.पुट्टप्पा) और "मंकु तिम्मन कग्गा" (लेखक-डॉ0 डी.वी.गुंडप्पा) का कन्नड़ से हिंदी में अनुवाद।

सामाजिक क्षेत्र

ए) कुछ सभापति (और कुछ सचिव) के रूप में अनेकों महिलाओं और शिशु संस्थाओं में सेवा कार्य
बी) कर्नाटक राज्य के समाज कल्याण बोर्ड में आंचलिक सदस्य के रूप में कार्य।
सी) बालिका गाइड संचालन के लिए राज्य स्तर पर कमिश्नर के रूप में कार्य।
डी) उत्तर प्रदेश के सभी पंजीकृत संस्कृत विश्वविद्यालयों के लिए राज्यपाल द्वारा नामांकित सदस्य।
इ) "हिन्दुस्तान समाचार" हिन्दी समाचार एजेंसी की सभापति
एफ) एन आर आई देशों के सहयोगी संगठन की सभापति।

राजनैतिक

ए) धारवाड़ से लोकसभा सदस्य(1962-1980)
बी) धारवाड़ से लोकसभा सदस्य(1984-1990)
1) ए) प्रधानमंत्री के अधीन उपमंत्री (अणु, ऊर्जा, सांख्यिकी संस्थाओं और प्रधानमंत्री के सार्वजनिक विभाग की प्रभारी के रूप में (1966-1969)
बी) प्रवास, विमान और ऋतु विज्ञान की राज्यमंत्री (1969-1974)
सी) कानून, न्याय और कंपनी के मामलों की मंत्री
2) कुछ संयुक्त चयन समिति की सभापति और कुछ अन्य राज्यसभा व लोकसभा की सदस्या के पद पर
3) पूर्वीय और पाश्चिमात्य देशों का अधिक से अधिक सरकारी दौरा किया। भारत के प्रतिरूप योजना के अन्तर्गत 5 अफ्रीकिय देशों की यात्रा

1990 के बाद स्वयं संपादित कार्य

ए) C A P A R T के अंतर्गत ग्रामीण अभिवृद्धि मंत्रालय की उपसभापति
बी) निम्नजाति और निम्नजाति तरह के राष्ट्रीय कमीशन की सदस्या
सी) राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की उपसभापति।

देश की विभिन्न उत्पादन क्षमताओं की योजनाओं को सूचनानुसार कार्य प्रारंभ किया।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के उप सभापति के रूप में योजनानुसार (आयुर्वेद-पांडुलिपि को कुछ विस्तृत किया है) तिगुलरी पांडुलिपि की हस्तप्रति (पाश्चिमात्य घाट में) ग्रंथ हस्तलिपि को (पूर्वीय घाट में) और शारदा हस्तलिपि को जम्मू और काश्मीर में संकलित किया। और एक पांडुलिपि पुस्तकालय और एक अनुसंधान संस्थान यूना (हिमाचल प्रदेश) में प्रारंभ किया।

मैं संसदीय वाचनालय कमेटी में सभापति के पद पर कार्यरत थीं। बाद में मेरा पहला लोकसभा चुनाव 1962 में हुआ।

—डॉ0 सरोजिनी महिषी

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर-560 018

इकतीसवाँ पदवीदान समारोह, दिनांक : 19 दिसंबर 2004 (इतवार)

सुश्री बी.एस.शांताबाई - प्रधान सचिव, स्वागत भाषण एवं प्रतिवेदन

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के इकतीसवें पदवीदान समारंभ के सुअवसर पर पूर्व संसद सदस्य (राज्य सभा) पूर्व केन्द्र मंत्री वर्तमान अध्यक्ष संसदीय हिन्दी परिषद् नई दिल्ली की डॉ0 सुश्री सरोजिनी महिषीजी, कर्नाटक राज्य के औद्योगिक मंत्री माननीय श्री पी.जी.आर.सिन्ध्याजी, समिति की अध्यक्षा डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्तिजी, समिति की कार्यकारिणी समिति के सदस्य, परीक्षा मंडल के सदस्य, संस्थाओं से पधारे हुए सदस्य/पदाधिकारियों कर्नाटक के हिन्दी प्रचारकों, पदक दानियों, समिति के कार्यकर्तागण, सामने बैठे बुजुर्ग भाईयों, हिन्दी प्रेमियों, हिन्दी पदवी पानेवाले स्नातकों, दूरदर्शन, आकाशवाणी, पत्र-पत्रिकाओं के प्रतिनिधियों आगन्तुक अतिथियों का हर्षपूर्ण हृदय से स्वागत करती हूँ। कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की नींव के मुख्य आधार शिला स्व. डॉ0 पी.आर.श्रीनिवास शास्त्रीजी का स्मरण करते हुए आगे का वक्तव्य आपके सम्मुख रखना चाहती हूँ।

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की स्थापना क्यों, कैसे हुई, इसका संक्षिप्त इतिहास आपके सम्मुख रखना चाहती हूँ। जब दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार-प्रसार कार्य आरम्भ हुआ तो डॉ0 पी.आर.श्रीनिवास शास्त्रीजी, सुश्री एम.के.अहल्या बाई, सुश्री एन.सुशीला, श्रीमती मुत्तूबाई मानेजी, श्रीमती आर.माधवीजी, आदि और अन्य कई महिलाओं के संघटन से हिन्दी प्रचार-प्रसार चलता रहा। हम छात्रों को अन्य संस्थाओं से संचालित हिन्दी परीक्षाओं में बिठाते थे। यह क्रम करीब 1953 से 1958 तक चलता रहा। तब शास्त्रीजी के मन में और बुजुर्ग महिलाओं के मन में यह भावना उठी कि हम लोग बहुत से छात्रों को तैयार कर अन्य संस्था में भेजने के बजाय खुद ही क्यों न परीक्षा संचालन करें। तब हम सभी के मन में एक संस्था की स्थापना करने की इच्छा हुई। तब कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के नाम से 1953 में संस्था प्रारंभ कर 1958 में इसका पंजीकृत करके-चामराजपेट-चौथे रास्ते में श्री सिद्धाश्रम नाम के मठ के प्रथम तल के एक कमरे में प्रारंभ किया। 1958 से परीक्षाएँ संचालन करना शुरु किया। धीरे-धीरे मान्यता का प्रश्न उठा, तब श्री निजलिंगप्पाजी कर्नाटक के मुख्य मंत्री थे। उनके आशीर्वाद से दो उच्च परीक्षा के लिए स्थाई मान्यता प्रदान की। केन्द्र सरकार से मान्यता का प्रश्न उठा तो उनके आदेश के अनुसार भवन खरीदने की प्रक्रिया हुई। तब चामराजपेट मुं जस्टिस महादेवय्या का विशाल घर था जो उन्होंने मरने से पहले बच्चों के नाम यह वसीयत बनाया था कि इस भवन को बेचकर उसके धन का बँटवारा कर लें, तब उन्होंने वह भवन सवा (1.25) लाख रुपये में देने का निश्चय किया तब हमारे पास उस समय केवल 90 हजार रुपये जमा थे, वह भी हम सब महिलाएँ अवैतनिक काम करने पर यह पैसा इकट्ठा हुआ था। 35 हज़ार रुपये की और आवश्यकता थी। तब मेरे स्व. भाई श्री शिवानंद स्वामीजी, बी.एस.मीराबाईजी दोनों ने 35 हज़ार रुपये की सहायता दी तब यह भवन खरीदा गया।

इस प्रकार उनकी मदद से हमें कर्नाटक सरकार और केन्द्र सरकार दोनों से स्थायी मान्यता प्राप्त हो गयी। हिन्दी प्रचार-प्रसार करते करते इस भवन में काफी सुधार लाया गया। मेरी एक बहन बी.एस.मीराबाई थीं, वह हिन्दी अध्यापिका थीं, उन्होंने अपने परिश्रम से जितना कमाया वह सब समिति को दान में दे दिया उस धन से समिति में मीराबाई स्मारक नाम से एक मंडप का निर्माण करवाया गया, जिसका उद्घाटन सन् 1980 में उस समय के मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती वरलक्ष्मी गुंडूराव द्वारा सम्पन्न करवाया गया, समिति का पदवीदान समारोह तथा रजत जयंती समारोह इस मंडप में संपन्न हुआ। आज इस मीराबाई स्मारक मंडप में विभिन्न तरह के कार्यक्रम आयोजन होते रहते हैं।

जैसाकि आप सबको विदित है कि प्रातः स्मरणीय राष्ट्रपिता पूज्य महात्मा गाँधीजी ने 1918 में सम्पूर्ण भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने के पवित्र उद्धेश्य से दक्षिण में हिन्दी प्रचार की नींव डाली। गाँधीजी की प्रेरणा एवं

उनके प्रोत्साहन आशीर्वाद से प्रेरित होकर संस्था द्वारा हिन्दी प्रचार का कार्य शुरू हुआ उस समय हिन्दी के पक्षपाती राष्ट्र के कर्णधार डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, लालबहादुर शास्त्री, पुरुषोत्तम दास टंडन, आदि महान्-महान् नेताओं ने आशीर्वाद दिया है। हिन्दी प्रचार के कार्यकलापों में हज़ारों निस्वार्थ प्रवर्तकों ने अपनी सेवा प्रदान की है। लाखों की संख्या में लोगों ने हिन्दी का अध्ययन किया है और आज भी करते आ रहे हैं। समिति का प्रधान लक्ष्य हिन्दी का प्रचार प्रसार करना है। साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं, विशेषकर कन्नड़ भाषा की उन्नति करना भी समिति अपना कर्तव्य और लक्ष्य मानती है। हिन्दी में स्वतंत्र सृजनात्मक शक्ति कन्नड़ के लोगों में उत्पन्न करना, कर्नाटक के हिन्दी लेखकों को प्रोत्साहन देना, हिन्दी रचनाओं का प्रकाशन करना, कन्नड भाषा की उच्च साहित्यिक कृतियों का हिन्दी में अनुवाद करना आदि हिन्दी प्रचार के साथ समिति का महान् उद्धेश्य है। समिति के कुछ कार्यकलाप इस प्रकार हैं –

1. समिति ने 1968 में गरीब, असहाय महिलाओं को मुद्रणकला में प्रशिक्षण देने हेतु मुद्रण कला विद्यालय खोला है। इन महिलाओं को छात्रवृत्ति देकर कंपोसिंग, प्रिंटिंग, बैंडिंग आदि काम सिखाकर हिन्दी, अंग्रेजी तथा कन्नड़ भाषाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है। लेकिन आजकल कम्प्यूटर, गृह उद्योग के कारण महिलाएँ प्रशिक्षण के लिए न आने के कारण अब केवल समिति का काम ही मुद्रणालय में सम्पन्न हो रहा है।

2. सन् 1984 में हिन्दी माध्यम से हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण कालेज आरंभ किया गया। धीरे-धीरे यह कालेज सात जगहों (हुबली, शिमोग्गा, बेलगाम, बल्लारी, हासन और रायचूर) पर खोले गये। राज्यसरकार ने इस कोर्स को मान्यता दी है और इसकी परीक्षा कर्नाटक राज्यसरकार की परीक्षा मंड़ली की ओर से ही चलती है। इन सातों कालेजों में प्रतिवर्ष कुल 480 छात्र प्रशिक्षण पा रहें हैं। आज इस कालेज के बारे में दो शब्द कहते हुए बड़े दुःख का अनुभव हो रहा है कि 1984 से सभी कालेज बिना किसी रुकावट के चल रहे थे, 1997-98 में "राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्" ने भी इसे मान्यता प्रदान की थी, किन्तु जिस कर्नाटक सरकार ने इसकी पूरी छानबीन करके मान्यता प्रदान की थी उसी कर्नाटक सरकार ने कालेज के चलते बीच में 2001 नवंबर में एकाएक इस हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण के बारे में समाचार पत्र में छपवाया कि यह कोर्स बी.एड्. के समान नहीं है, इसकी मान्यता रद्द की गयी है हिन्दी प्रशिक्षित अध्यापकों को भविष्य में कोई तरक्की नहीं दी जाएगी ऐसी दुःखदपूर्ण सूचनाएँ हिन्दी राष्ट्रभाषा के प्रति कर्नाटक सरकार ने छपवाई, जिसे पढ़कर हिन्दी के प्रति लगाव रखने वाले छात्र, अध्यापक, पोषकवर्ग काफी हताश हुए। इसके बाद सभी स्वैच्छिक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने काफी परिश्रम किया, न्यायालय से प्रार्थना किया। डेढ़ साल संघर्ष करने के बाद कर्नाटक सरकार ने निकाले हुए 2001 के आदेश को रद्द करके पुनः पूर्ववत् हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण कालेज चलाने की अनुमति प्रदान की। 2001 में जो गाज कर्नाटक सरकार ने राष्ट्रभाषा हिन्दी पर गिरायी थी उसका घाव आज तक नहीं भरा। इस हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण कालेज के बारे में परीक्षाएँ आदि चलाने की कारवाई बहुत ढ़िलाई से हो रही है, जैसे कि 2003-04 सत्र के छात्रों की परीक्षा अप्रैल-मई-2004 में सम्पन्न हो जानी थी वह अब नवंबर-दिसम्बर 2004 में हुई।

3. समिति हिन्दी टंकण और शीघ्रलिपि कक्षाओं को भी (सर्टिफिकेट कोर्स) चलाती है। हिन्दी टंकण कोर्स में उत्तीर्ण छात्रों को भारत सरकार के कार्यालयों, बैंकों में नौकरी मिल रही है। समिति द्वारा बेंगलोर, मैसूर, मंगलूर, पुत्तूर, मंड्या, कूर्ग, हासन, हुबली, गुलेदगुड्ड, रायचूर आदि स्थानों पर हिन्दी टंकण वर्ग चल रहें हैं।

4. समिति की ओर से प्रारंभिक और उच्च परीक्षाएँ वर्ष में दो बार चलाई जाती हैं। इन परीक्षाओं में वर्ष में एक लाख तक विद्यार्थी हिन्दी परीक्षा में बैठते हैं। राज्यसरकार एवं भारतसरकार ने इन परीक्षाओं को एस.एस.एल.सी., इंटर और बी.ए. हिन्दी के स्तर की स्थाई मान्यता प्रदान की है। समिति की परीक्षाएँ कर्नाटक भर में सुव्यवस्थित व्यापक रूप से चलाई जा रही हैं। केन्द्र सरकार की मदद से 2004-2005 में 355 पूरे कर्नाटक में निःशुल्क हिन्दी कक्षाएँ, विद्यालयों के लिए पुस्तकालय, हिन्दी प्रचारक सम्मेलन, हिन्दी स्पर्धाएँ, पुरस्कार आदि कार्यक्रम संपन्न होते हैं। इन योजनाओं के कार्यक्रम हेतु प्रतिवर्ष 75% आर्थिक सहायता प्राप्त होती है इसके लिए हम भारत सरकार को बहुत आभार व्यक्त करते हैं। यह योजना 1964 से चल रही है। क्षेत्रीय अधिकारी हर साल निरीक्षण भी करते हैं। उनके मार्ग दर्शन भी प्राप्त होते रहते है।

हिन्दी परीक्षा में अधिक अंक पानेवाले छात्रों को स्वर्णपदक, रजतपदक प्रदान करने हेतु जिन-जिन महानुभाओं ने आर्थिक दान दिया है उनके नाम से प्रतिवर्ष इस पदवीदान समारंभ में निम्नप्रकार पदक प्रदान किए जाते हैं।

1. उत्तमा - प्रथम स्थान - स्वर्ण पदक - स्व. हेच. हनुमंतप्पा 2. उत्तमा - द्वितीय स्थान - स्वर्ण पदक - सुश्री बी.एस.शांताबाई 3. उत्तमा - तृतीय स्थान - स्वर्ण पदक - डॉ0 आर. लक्ष्मीदेवी 4. उत्तमा - चौथा स्थान - स्वर्ण पदक - श्रीमती शीलादेवी दुबे, लखनऊ 5. उत्तमा - पाँचवाँ स्थान - रजत पदक - श्रीमती सी.के.विमला 6. भाषा भूषण - प्रथम स्थान - स्वर्ण पदक - श्री कटील गणपति शर्मा 7. भाषा भूषण-द्वितीय स्थान-स्वर्ण पदक-स्व. डॉ0 पी.आर.श्रीनिवास शास्त्री 8. भाषा भूषण - तृतीय स्थान - स्वर्ण पदक - स्व. के.एस.श्रीधर शास्त्री 9. भाषा प्रवीण उत्तरार्ध - प्रथम स्थान - स्वर्ण पदक- प्रो. एस.राजीवी बाई 10. भाषा प्रवीण उत्तरार्ध-द्वितीय स्थान- स्वर्ण पदक - स्व. बी.एस.मीराबाई 11. भाषा प्रवीण उत्तरार्ध-तृतीय स्थान- स्वर्ण पदक-प्रो. एस.सरगु कृष्णमूर्ति 12. हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण परीक्षा-प्रथम पुरस्कार-स्वर्ण पदक-स्व. श्रीमती ललिता अश्वत्थनारायण 13. हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण परीक्षा-द्वितीय पुरस्कार- रजत पदक-श्री कटील गणपति शर्मा 14. हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण परीक्षा-तृतीय पुरस्कार- रजत पदक-श्री के.एस. श्रीकण्ठ शास्त्री 15. पं. रामेश्वर दयाल दुबे नाम से एक पुरस्कार है जिसमें एक पुरुष हिन्दी सेवी को एक हज़ार रुपये नकद तथा प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। 16. सुश्री बी.एस.शांताबाई नाम से दो पुरस्कार हैं जिसमें दो महिला हिन्दी सेवी को तीन तीन हज़ार नकद तथा प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। 17. प्रारंभिक परीक्षा में मध्यमा परीक्षा में सबसे अधिक अंक पानेवाले पाँच विद्यार्थियों को डॉ0 सिस्टर क्लेमेंट मेरी के नाम पर पुरस्कार के रूप में प्रमाण पत्र तथा पुस्तकें दी जाती हैं।

18. प्रारंभिक परीक्षा- सुबोध और प्रथमा परीक्षा में अधिक अंक पानेवाले छात्रों को समिति द्वारा पुरस्कार के रूप में प्रमाणपत्र तथा पुस्तकें दी जाती हैं।

गत 52 वर्षों से कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की कुछ मुख्य-मुख्य उपलब्धियों का विवरण आपके सामने प्रस्तुत करते हुए हर्ष का अनुभव होता है।

- कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति अपने हिन्दी प्रचारकों के द्वारा अस्सी लाख से अधिक कर्नाटक के लोगों को हिन्दी सिखा चुकी है।
- विविध स्तर की करीब 160 हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है।
- समिति ने भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं की उपाधि परीक्षा में उत्तीर्ण करीब नौ हज़ार छात्रों को इन बीस वर्षों में हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण दे चुकी है।
- समिति के प्रयत्न से कर्नाटक राज्य में हिन्दी प्राईमरी, मिडिल, हाईस्कूल व कालेजों में पढ़ाई जा रही है।
- समिति के प्रयत्न से मैसूर विश्वविद्यालय में पत्राचार पाठ्य-क्रमानुसार हिन्दी एम.ए. परीक्षा चलाना प्रारंभ हुआ है।
- हिन्दी शिक्षा के समांतर में हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषा में साहित्यों के समन्वय, आदान प्रदान तथा हिन्दी में मौलिक सर्जन प्रक्रिया में भी समिति का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन रहा है।
- समिति, हिन्दी शिक्षा के माध्यम से कर्नाटक की नारी समाज के लिए सार्वजनिक सेवा का मार्ग भी सफलता से प्रशस्त करती आ रही है।
- राज्य सरकार से हो या केन्द्र सरकार से या अन्य दानियों से बिना सहायता समिति अपने ही बलबूते पर कर्नाटक में हिन्दी प्रचार कार्य को सुदृढ़ बनाने हेतु समिति ने बेंगलोर,रायचूर,हुबली,हासन, शिवमोग्गा तथा बल्लारी जिला केन्द्रों में हिन्दी भवन का निर्माण किया है।
- समिति सन् 1980 से "हिन्दी प्रचार वाणी" मासिक पत्रिका हर माह नियमित रूप से प्रकाशित करती आ रही है इसमें समिति से संबंधित सूचनाओं के साथ साहित्यिक निबन्ध, कविताएँ आदि प्रकाशित होते हैं।
- समिति, कर्नाटक राज्य के शिक्षणालयों में केवल हिन्दी प्रवेश की साधिका ही नहीं रही, अपितु स्कूली शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ प्रौढ़ जनता की ज्ञान पिपासा की परितृप्ति में भी सफलता प्राप्त करती आ रही है।

समिति के सभी सदस्यगण, कार्यकर्ताओं के लिए संतोष की बात है कि कर्नाटक राज्य की स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ भाई चारे की भावना से हिन्दी प्रचार के लिए दृढ़ संकल्प है। पिछले साल समिति ने अपने हिन्दी प्रचार के 50 वर्ष पूर्ण करने के

उपलक्ष्य में स्वर्ण जयंती मनाई। उसमें 80 साल से ऊपर हिन्दी के लिए समर्पित महानुभावों का सम्मान किया गया। उन महानुभावों के नाम निम्न प्रकार हैं–

1. स्व. श्री निट्टूर श्रीनिवासराव, 2. प्रो. ना.नागप्पा,
3. श्री कटील गणपति शर्मा 4. प्रो. एस.श्रीकण्ठ मूर्ति
5. डॉ0 लक्ष्मीमल्ल सिंघवी 6. श्री कृष्णानंद झा
7. श्री एम.के.भारती रमणाचार्य 8. प्रो. एस.रामचंद्र
9. डॉ0 एस.एन. सुब्बराव 10. श्री बी.आर.नारायण
11. श्रीमती महादेवी ताई 12. प्रो.एम.राजीवी बाई
13. सिस्टर क्लेमेंट मेरी 14. सुश्री चन्नम्मा हल्लिकेरी.

आदि का फल पुष्प, शाल, स्मृति चिन्ह आदि से सम्मान किया गया। आगे हिन्दी प्रचार के और भी क्या कार्यक्रम बन सकते हैं। वह तो समय ही बताएगा। क्योंकि लाख प्रयत्न करने पर भी कर्नाटक में हिन्दी की स्थिति अभी भी नहीं सुधरी है इसके लिए सभी को एकजुट होकर काम करना है। हिन्दी प्रचार प्रसार के कार्य को मजबूत बनाना है तो सबसे पहले हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण कालेजों में सुधार होना ही है। गाँधीजी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाया उसके प्रचार के लिए उसे संस्थागत रूप में स्थापित किया। तब भारत भर में हिन्दी प्रचार प्रसार को एक स्थाई रूप प्रदान करने के लिए भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय ने सन् 1964 में भारत सरकार और संस्थाओं की सर्वसम्मति से "अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ," नई दिल्ली नामक एक हिन्दी संघ की स्थापना दिल्ली में की। क्योंकि सरकार चाहती थी कि स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के लिए एक ऐसा संगठन बनाया जाए जिससे सभी स्वैच्छिक संस्थाओं की परीक्षाओं में एकरूपता हो और उनसे व्यवहार करने में सरकार को, संस्थाओं को सहूलियत हो। इसके प्रप्रथम अध्यक्ष स्वर्गीय पूज्य बाबू गंगाशरण सिंह जी थे। इस संघ की विशेषता यह है कि यह संस्था गैर सरकारी होते हुए भी इसके संगठन में गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि, राज्य सरकारों के प्रतिनिधि तथा केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि शामिल हैं। शिक्षा मंत्रालय और भारत सरकार के इस संस्था की स्थापना होकर चालीस साल से अधिक का समय बीत गया। भारत भर में 24 संस्थाएँ जो हिन्दी प्रचार प्रसार में लगी हुई हैं, उसका यह एक संगठित रूप "अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ" नई दिल्ली है। दुःख से कहना पड़ रहा है कि आज तक यह संस्था सरकार से जुड़ी है फिर भी भवन बनाने में सफलता न पा सकी है। आज भारत भर में चौबीस स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ है अगर वे सभी संस्थाएँ मिल जाएँ तो किसी भी राज्य में कोई भी ताकत हिन्दी को छेड़ नहीं सकती उसके लिए दायरा सीमित नहीं कर सकती क्योंकि हिन्दी पूरे भारत को एक सूत्र में बाँधनेवाली भाषा है इसलिए इसके प्रचार में सरकार को चाहिए कि वो किसी भी प्रकार का नियम न लागू कर आकाश में उड़ते हुए पक्षी की भाँति मुक्त कर दे। समिति का यह अहोभाग्य है कि हमारी प्रार्थना स्वीकार कर बडी बहन डॉ0 सरोजिनी महिषी जी पधारी हैं, उन्होंने दीक्षांत भाषण देने का अनुग्रह किया है। मैं आपको समिति की ओर से, हिन्दी प्रचारक की ओर से उपस्थित सभी हिन्दी प्रेमियों की ओर से स्वागत करती हूँ।

कर्नाटक राज्य के औद्योगिक मंत्री माननीय श्री पी.जी.आर.सिन्ध्याजी पधारे हैं, आप सिद्धारूढ़ स्वामीजी के परम भक्त हैं उनके परिवार के लोग भी बड़े सुसंस्कृत हैं। तथा खासकर समिति के पूर्व अध्यक्ष श्रीमती आर.मुत्तूबाई मानेजी के संबंधी भी हैं। जब मैंने उनसे मुख्य अतिथि के रूप में पधारने की प्रार्थना की, तो तुरन्त आपने मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर सहर्ष पधारने की अनुमति दे दी, इस प्रकार से तुरन्त अनुमति देनेवाले, प्रार्थना पर ध्यान देनेवाले मंत्री महोदय जी का मैं समिति की ओर से, हिन्दी प्रचारकों की ओर से हृदय से स्वागत करती हूँ। मैं कार्यकारिणी समिति तथा परीक्षा समिति के सदस्यों, स्नातकों सभी उपस्थित हिन्दी प्रेमियों, हिन्दी प्रचारक बंधुओं और स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के पदाधिकारियों का मैं समिति की ओर से स्वागत करती हूँ। समिति की संपूर्ण समृद्धि के लिए भाषा-भेद, प्रांत-भेद न रखकर सहायता की प्रार्थना करते हुए, मैं आप सब लोगों का, दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं पत्र-पत्रिकाओं के प्रतिनिधियों का भी मैं समिति की ओर से स्वागत करती हूँ।

<u>जय हिन्द जय हिन्दी जय कर्नाटक</u>

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलोर–18

इकतीसवाँ पदवीदान समारोह दिनांक 19-12-2004 इतवार

डॉ0 (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्ति - अध्यक्ष

अध्यक्षीय भाषण

पूर्व केन्द्र मंत्री, संसदीय हिन्दी परिषद् की अध्यक्ष आदरणीय डॉ0 सरोजिनी महिषीजी, औद्योगिक मंत्री कर्नाटक सरकार, सन्मान्य श्री पी.जी.आर. सिंध्याजी, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की कार्यकारिणी समिति के सदस्य, परीक्षा मंडली के सदस्य, आमंत्रित सज्जनों और देवियों,

आज कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति का 31वाँ दीक्षान्त समारोह डॉ0 सरोजिनी महिषी के विद्वत्पूर्ण भाषण के साथ संपन्न हुआ है। यह हमारा अहोभाग्य है। परमपूज्य गांधीजी की प्रेरणा से महिलाओं द्वारा राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए 51 वर्ष पहले कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की स्थापना स्व.डॉ0 श्रीनिवास शास्त्री तथा स्व. श्रीमती मुत्तूबाई मानेजी के सहयोग से हुई और तब से समिति राष्ट्रभाषा प्रचार कार्यों में स्तुत्य सेवा करती आ रही है। आज समिति के लिए एक शुभ दिन है। संस्कृत, हिन्दी और कन्नड़ की विदुषी डॉ0 सरोजिनी महिषी ने अपने व्यस्त जीवन के बावजूद हमारे निमंत्रण को स्वीकार क़रके दिल्ली से इतनी दूर पधारकर अपने प्रेरणाप्रद भाषण से छात्रों और प्रचारकों को प्रोत्साहित किया है। शिक्षण क्षेत्र में तथा साहित्यिक क्षेत्र में आपकी देन अपूर्व है। सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में भी आपने समर्पित भाव से जो सेवा की है उससे आपका देशानुराग अभिव्यक्त होता है। ऐसी विदुषी महिला ने आज हमारे बीच उपस्थित होकर हितवचन सुनाया है, यह हमारा अहोभाग्य है।

मुख्य अतिथि के रूप में इस सभा को अलंकृत किया है सन्मान्य श्री पी.जी.आर. सिंध्याजी ने। अपने कर कमलों से छात्रों को स्वर्णपदक, रजतपदक तथा पुरस्कार प्रदान करके आपने अपने छात्र-वात्सल्य को प्रदर्शित किया है। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि कर्नाटक सरकार के औद्योगिक मंत्री के उच्च पद पर विराजमान होते हुए भी हमारे साथ इस सभा में उपस्थित हुए हैं।

दीक्षान्त समारोह के इस शुभ अवसर पर सभा की अध्यक्ष के रूप में उपस्थित होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। यह तो अपार हर्ष की बात है कि संस्कृत व हिन्दी की विदुषी व विख्यात लेखिका डॉ0 सरोजिनी महिषी का सत्संग मुझे मिला क्योंकि ये दोनों भाषाएँ, अर्थात् देवभाषा संस्कृत व राष्ट्रभाषा हिन्दी मेरी भी प्रिय भाषाएँ हैं। डॉ0 सरोजिनी महिषी और मुख्य अतिथि सन्मान्य पी.जी.आर. सिंध्याजी को मैं प्रणामपूर्वक कृतज्ञता अर्पित करती हूँ।

इस समारोह में सम्मानित प्रचारकों का, पदवी प्राप्त छात्रों का, पुरस्कार विजेता विद्यार्थियों का अभिनन्दन करके उनसे अनुरोध करती हूँ कि हिन्दी के साथ मातृभाषा कन्नड़ की भी अभिवृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहें।

निज भाषा की उन्नति से ही सबकी उन्नति होती है। इसको ध्यान में रखकर हम यह संकल्प करें कि भारतीय भाषाओं की उन्नति में दत्तचित्त रहकर भारत को विश्व में सर्वश्रेष्ठ साबित करें।

जय हिन्द जय हिन्दी जय कर्नाटक

हिन्दी प्रचारक की डायरी–31

–प्रो. एस. श्रीकण्ठमूर्ति

21-12-2003 श्री जयभारती हिन्दी विद्यालय में स्वर्गीय डॉ0 एस. रेवण्णा के स्मरणार्थ सत्रहवाँ अन्तर हिन्दी विद्यालय के छात्रों के लिए हिन्दी रसप्रश्न-स्पर्धा (QUIZ) का आयोजन किया गया था। कर्नाटक स्वैच्छिक हिन्दी विद्यालय संस्था संघ के अध्यक्ष श्री कटील गणपति शर्माजी ने अध्यक्षासन ग्रहण किया। श्री कांति स्वरूपजी (मास्टरजी) मुख्य अतिथि रहे। उस समारोह में मैंने भी भाग लिया।

27-12-2003 समिति की परीक्षा बोर्ड की बैठक हुई। जिसमें मैं भी भाग लिया।

27-12-2003 श्री चन्द्रशेखर भारती कल्याण मंडप में कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया गया। लोक सभा सदस्य एवं अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के अध्यक्ष डॉ0 लक्ष्मीमल्ल सिंघवी जी ने दीप प्रज्वलन द्वारा स्वर्ण जयंती समारोह का उद्‌घाटन किया। तदनंतर निवृत्त न्यायाधीश शतायुषी श्री निट्टूर श्रीनिवास रावजी ने स्वर्ण जयन्ती स्मारिका ग्रंथ का विमोचन किया।

उस अवसर पर प्रमुख हिन्दी सेवियों के साथ-साथ मेरा भी सम्मान (शाल, पुष्पमाला, स्मृतिचिन्ह, प्रशस्ति पत्र तथा फल-पुष्प) द्वारा किया गया।

उसी दिन दोपहर को श्री कटीलगणपति शर्माजी की अध्यक्षता में हिन्दी प्रचार-प्रसार संबंधी चर्चागोष्ठी हुई जिसमें मैंने भी भाग लिया।

28-12-2003 श्री श्री श्री चन्द्रशेखर भारती मंडप में समिति का तीसवाँ दीक्षान्त समारोह संपन्न हुआ। किन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की निदेशिका डॉ0 पुष्पलता तनेजाजी ने दीक्षांत भाषण दिया। छात्रों को स्वर्ण पदक तथा अन्य पुरस्कार देते हुए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, दक्षिण क्षेत्रीय समितिं बेंगलूर के क्षेत्रीय निदेशक सन्मान्य श्री एम.वासुदेवन ने स्नातकों को हितवचन सुनाया। डॉ0 (श्रीमती) राधाकृष्णमूर्ति ने अध्यक्षासन ग्रहण किया था। शिक्षक विद्यालय की प्रांशुपाल डॉ0 (श्रीमती) उषाराणीजी ने वन्दनार्पण किया।

31-12-2003/1-1-2004 मैं समझता हूँ कि इस डायरी को यहाँ स्थगित कर देना उचित और न्याय संगत है।

यह तो हिन्दी प्रचार की डायरी नहीं है। हिन्दी प्रचार के सेवा क्षेत्र में 1935 से 2004 तक कार्य करनेवाले एक साधारण हिन्दी प्रचारक के अपने जीवन घटित घटनाओं का, उतार-चढ़ाव का संघर्षों का तथा अनुभवों का, इमानदारी के साथ विवरण प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

मेरे भिन्न-भिन्न सेवा-कार्यक्षेत्र रहे–मैसूर, मद्रास, अनंतपुर– मद्रास, बेंगलूर, चित्तूर–बेंगलूर, धारवाड, मद्रास, तुमकूर–मद्रास, हैदराबाद, मैसूर, बेंगलूर–मद्रास, बेंगलूर–मद्रास, धारवाड–मद्रास, बेंगलूर तथा बेंगलूर, मद्रास–सिकंदराबाद, उदयपुर, बेंगलूर रहे हैं।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि मुझे किसी एक स्थान पर स्थायी रूप से रहकर कार्य करने की सुविधा प्राप्त ही नहीं हुई। इस प्रकार के स्थान परिवर्तन का जीवन की व्यवस्था पर काफी प्रभाव पड़ता रहा।

इसी प्रकार कार्य-पदों के बारे में भी विविधता रही–

व्यवस्थापक-क्लर्क-हिन्दी प्रचारक-फिर्का संगठक-विशारद विद्यालय का प्रधानाध्यापक-प्रचारक विद्यालय का प्रधानाध्यापक, मंडल संघठक, प्रान्तीय सचिव-साहित्य सचिव-कालेज लेक्चरर-शिक्षा सचिव-स्नातकोत्तर प्रवक्ता- बी.एड.कालेज के प्रांशुपाल-संयुक्त सचिव-लेखक-प्रशिक्षण कालेज का उप-प्रांशुपाल-प्रशिक्षण कालेज का प्रांशुपाल आदि-आदि।

इन विविध पदों पर रहकर कार्य करते समय एक तरह की सिकुड़न होती थी, अवरुद्ध वातावरण सा रहता था। प्रत्येक पद पर कार्य करते समय

तत्संबंधी उत्तरदायित्व, संघर्ष, उतार-चढ़ाव, तनाव आदि को सहना पड़ता था। मेरे अपने समग्र हिन्दी प्रचार जीवन में सबसे अधिक अनुकूल आत्मतृप्ति देनेवाला, समय 1939 से 1949 तक के "हिन्दी प्रचारक" के रूप में कार्य करते समय आमजनता का स्नेह एवं सहानुभूति एक प्रकार की स्वच्छन्दता, आत्मतृप्ति रही।

"आता है याद मुझको गुज़रा हुआ जमाना।
चढ़कर रोज़ ट्राम पर हिन्दी सिखाने जाना॥
आपस में भाईचारा, बापू के गीत गाना।
खादी का बाना पहने, जनजन की प्रीति पाना॥
जीवन सरल, उच्च विचार, यह सब को सिखाना।
आता है याद मुझको गुज़रा हुआ जमाना।"

इस प्रकार प्रचार, शैक्षणिक कार्य कार्यालय कार्य आदि समय समय पर परिवर्तन होते जाने के कारण किसी एक अंश पर ध्यान केन्द्रित करना संभव न हो पाया और प्रचारक जीवन भर इस परिवर्तन शील व्यवस्था का शिकार बना रहा।

इस डायरी में जो कार्य-विवरण दिया गया है वह स्मृति के आधार पर अधिकांश दिया गया है। रिकार्ड का जहाँ जहाँ प्राप्त हुए, तारीखवार विवरण दिया गया है। बाकी सभी विवरण के लिए अपनी स्मृति पर अवलंबित करना पड़ा। यह स्वाभाविक ही है कई घटनाएँ तथा कई अनुभवों का, विस्मृति के कारण इस डायरी में स्थान प्राप्त नहीं हो पाया है।

उदाहरण के लिए

1. मद्रास में रहते समय मद्रास आये हुए सरहद-गान्धी जनाब खान अब्दुल ग़फ़ार खान से मिलने सभा के कई कार्यकर्ताओं के साथ में भी गया था और आधें घंटे तक उनसे बातें करते रहे।

2. सभा के प्रधान सचिव के साथ मद्रास एरोड्रोम जाकर सभा के अध्यक्ष तथा भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री से मिलकर थोड़ी देर बातें करके वापस आया था।

इनका, अपनी विस्मृति के कारण सभा स्थान पर डायरी में विवरण न दे पाया। इस तरह की और भी कई घटनाएँ रही होंगी जिनका उल्लेख इस डायरी में न हो पाया।

इस डायरी को स्थगित करने के पूर्व अपने प्रचारक जीवन में विविध रीतियों से सहायता करनेवाले, मोड़ों (TURNING POINTS) में पथ प्रदर्शन करनेवाले हितैषियों के प्रति अपनी कृतज्ञता भरी धन्यवाद्र समर्पित करूँगा।

सर्व प्रथम अपने दर्शन - स्पर्शन संभाषण द्वारा तथा "हिन्दी सीखकर देश की सेवा करो" वाले संदेश देकर हिन्दी दुनिया का द्वार खोलनेवाले राष्ट्र पिता पूज्य महात्मा गान्धी जी को कृतज्ञता पूर्वक मेरे नमन—

तदनन्तर—

(क्रमशः)

ಪ್ರಚಾರಕರಿಗೂ ಹಾಗೂ ಪೋಷಕರಿಗೂ ಪರೀಕ್ಷಾ ದಾಖಲಾತಿಯ ಬಗ್ಗೆ ಸೂಚನೆ

ಹಿಂದೀ ಪರೀಕ್ಷೆಗೆ ದಾಖಲಾತಿಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳ ಹೆಸರು, ಪೋಷಕರ ಹೆಸರನ್ನು ಪ್ರಚಾರಕರು ಸರಿಯಾಗಿ ಭರ್ತಿಮಾಡದೇ ಕಳುಹಿಸುತ್ತಾರೆ. ನಂತರ 2–3 ಹಾಗೂ 10 ವರ್ಷಗಳಾದ ಮೇಲೆ ಹೆಸರಿನಲ್ಲಿ ತಪ್ಪಾಗಿದೆ ಎಂದು ಕಾರ್ಯಾಲಯಕ್ಕೆ ಹೆಸರು ಬದಲಾಯಿಸಲು ಬರುತ್ತಾರೆ. ಇದರಿಂದ ಸಮಿತಿಯ ಕೆಲಸದಲ್ಲಿ ಬಹಳ ತೊಂದರೆಯಾಗುತ್ತಿದೆ. ವರ್ಷಪೂರ್ತಿ ಇದೇ ಕಾರ್ಯವಾಗುತ್ತದೆ. ಇನ್ನು ಮುಂದೆ, ಅಂದರೆ 2005ನೇ ಸಾಲಿನಿಂದ ಯಾವುದೇ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿಯೂ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿ ಹಾಗೂ ಪೋಷಕರ ಹೆಸರನ್ನು ಬದಲಾವಣೆ ಮಾಡಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲವೆಂದು ಈ ಮೂಲಕ ಸೂಚಿಸಲಾಗಿದೆ. ಆದುದರಿಂದ ಪ್ರಚಾರಕರು ಆವೇದನಾ ಪತ್ರಗಳನ್ನು ಭರ್ತಿಮಾಡುವಾಗ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಸರಿಯಾಗಿ ಅಂದರೆ ಶಾಲಾ ಕಾಲೇಜುಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಸರುಗಳನ್ನು ನೊಂದಾಯಿಸಿರುವಂತೆಯೇ ಭರ್ತಿ ಮಾಡಿ ಕಳುಹಿಸಲು ಪ್ರಾರ್ಥನೆ.

ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿನಿ

राष्ट्रपिता के राष्ट्रीय विचार

(साहित्य सेतु सागर से साभार)

—डॉ0 शंकरराव कप्पीकेरी

राष्ट्रपिता बापूजी अमर हैं। आपके राष्ट्रीय विचार स्तुत्य है। आपने देश की जनता को नई दृष्टि दी है, मानवता का संदेश दिया है। आपने अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए अंग्रेजी साम्राज्य को बड़ी चुनौती दी थी। जुल्मों को सहन किया था। जेल की यात्राएँ की थीं। अपनी जान को हथेली पर रखकर ब्रिटिश राज के सिंहासन को हिला दिया था। आजादी के लिये जन संग्राम किया था। सत्याग्रह आन्दोलन को चलाया था। ग्रामीण जनता को जगाया था। विदेशी वस्त्रों को जलाने का समर्थन किया था। स्वदेशी आन्दोलन को यशस्वी बनाया था। ग्रामोद्योगों के विकास के लिए अपनी ताकत लगाई थी। आप स्वयं सूत काता करते थे। उसी सूत के खादी के वस्त्र पहनते थे। नंगे देश का नायक होने के कारण कमीज या कुर्ता नहीं पहनते थे। टोपी भी पहनना छोड़ दिया था। सिर्फ घुटनों तक खादी की धोती पहनते थे। कमर में एक घड़ी लटकाते थे। आँखों पर चश्मा पहनते थे। पैरों में चमड़े की चप्पल पहना करते थे।

बापूजी 'सादा जीवन उच्च विचार' के प्रतीक थे। आजादी की लड़ाई में जान फूंकने के लिए अपने सारे भारत की यात्रा की थी। जनता को जाना-समझा था। गरीब देश की जनता के दुखों-कष्टों को देखकर आँसू बहाया था। इसी दर्द से व्याकुल होकर ग्रामराज का जोरदार समर्थन किया था। पंचायत राज से जनता को सच्चा न्याय दिलाना चाहते थे। प्रत्येक नागरिक को सुखी देखना-चाहते थे। आप शांति चाहते थे। आप जनता को संगठित करके नैतिक क्रान्ति करना चाहते थे। गरीबी की जहरीले जड़ को समय पर काटने के बड़े समर्थक थे। अमीरी और गरीबी की भयंकर दूरी को मिटाने के पक्षधर थे।

सारा संसार बापू को नमन करता है। देश के शासक बापू की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित करते रहते हैं। विदेशी नेताओं, राष्ट्राध्यक्षों, प्रधानमंत्रियों, राजदूतों तथा राजनेताओं द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित कराये जाते हैं। बापू की जयंती और बलिदान दिवस के अवसर पर बापू की समाधि के समीप सर्व धर्म प्रार्थना का आयोजन किया जाता है। सारे देश में बापू की जयंती मनाई जाती है। शहीद दिवस भी मनाया जाता है। गांधी के भक्त अपने स्वार्थो के लिए बाहरी आडंबरों का प्रदर्शन करते हैं। बापू के कार्यों को असली जामा नहीं पहना रहे हैं। अरबपति व करोड़पति बनते जा रहे हैं। इंद्रलोक का राज सुख भोगने में व्यस्त हैं। माया लोक वासी बनते जा रहे हैं।

परमवंदनीय बापूजी भारतीय जन समुदाय के मार्गदर्शक थे। विश्व के दीपस्तंभ थे। सारा संसार आपको श्रद्धापूर्वक नमन करता है। आपके विचारों का सम्मान करता है। आपके विचार मानव समाज के कल्याण के लिये थे। आपकी कथनी और करनी में साम्य था। किंचित भी अन्तर नहीं था। जैसा बोलते थे, वैसा करते थे। आपके विचार अनुभव पर आधारित थे। आप शांतिवादी थे, अहिंसा की साकार मूर्ति थे। समतावादी थे, सत्यवादी थे।

लोकशाहीवादी बापूजी सबका कल्याण चाहते थे। राजसत्ताधारी नेताओं के आलीशान बंगलों में नहीं रहा करते थे। वातायन, गगन चुंबी महलों में रहने के आकांक्षी भी नहीं थे। गरीब, नंगी, भूखी जनता को देखकर स्वयं भी साधु-सन्यासी का जीवन बिताते थे। भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के साथ आलीशान भवन में नहीं रहते थे। अपने अनुयायी बिरला के भवन में रहते थे। बापू के सुपुत्र देवदास गाँधी के साथ राजाजी की पुत्री का प्रेम विवाह हुआ था। राजाजी ब्राह्मण थे तो बापूजी वैश्य। बापूजी ने रिश्तेदारी का लाभ भूलकर भी उठाया नहीं था। देश के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरु के सरकारी शानदार भवन में भी

बापूजी ने रहना पसंद नहीं किया था। आपने सरकारी सुविधाओं का अपने लिये उपयोग नहीं किया था।

देश का दुर्भाग्य है कि बापू के विचारों व दर्शन पर राजसत्ता का सुख-वैभव भोग रहे सत्ताधीश विचार नहीं कर रहे हैं। सादा जीवन-उच्च विचार का भी स्मरण करना छोड़ दिया है। राज वैभव का सुख त्यागने के लिए कोई सत्ताधारी राजनेता तैयार नहीं है। वंशराज को भूल जाना नहीं चाहते। भारत के लाल बहादुर शास्त्री ही एक अपवाद हैं, जिन्होंने राजसत्ता का दुरुपयोग नहीं किया था। स्वर्गवास होते समय आपके बैंक खाते में सिर्फ 50 रुपये शेष थे। बापू के विचारों एवं जीवन-दर्शन से लाल बहादुरजी बड़े प्रभावित थे। नेहरुजी के स्वर्गवास होने के पश्चात ही काँग्रेस संसदीय दल ने ही शास्त्री का सर्वानुमति से चयन किया था।

बापू के देश में राजसत्ता के सिंहासन पर आरुढ़ राजनेता विदेशी शासन प्रणाली और संस्कृति के गुलाम बने हुये हैं, वैश्वीकरण और उदरीकरण की नीति को अपना कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का गुलाम बनने जा रहे है। स्वर्ग का सुख भोग रहे हैं। कंगाल से करोड़पति बन रहे हैं। दलाल व एजेन्ट भी धनपति बने हैं। ब्रोकर लाखों के मालिक बने हैं। राजनेताओं के कई चापलूस धनपति-भूपति बने बैठे हैं। भ्रष्टाचार का युग चल रहा है।

नशावृत्ति के दुश्मन बापू शराब को शैतान की ईजाद कहते थे। देश की जनता के जीवन को उजड़ने से बचाने के लिये शराब बंदी पर जोर दिया था। शराब पीने से लोग कंगाल बनते हैं। बुद्धि को भी भूल बैठते हैं। नशेबाज कुछ समय के लिये उचित और अनुचित का, पाप और पुण्य का माता और धर्पपत्नी का भेद भूल जाता है। शराब के नशे में धनवानों और इज्जतदारों को गन्दी नालियों में गिरते देखा जाता है।

उच्चाधिकारियों, शक्तिशाली धनवानों, राजनेताओं, ढोंगी समाज सुधारकों और नकली जगदगुरुओं को शराबपान करते हुये देखा जाता है। जनता का विश्वासघात किया जाता है। स्वतंत्रभारत में अधिकांश राजनेता एवं सत्ताधीश मंत्री भी नशा करते हैं। बापू स्वर्ग से देखकर आँसू बहा रहे हैं।

अध्यात्मवादी बापू मानव के शरीर को भगवान का दिव्य मंदिर बनाने के आकांक्षी थे। उसका उपयोग मानव सेवा के लिये करने के हिमायती थे। बापूजी शराब को व्यभिचार और चोरी दोनों से निंद्य मानते थे। उसे इन दोनों की जननी भी कहते थे। शराब की बुरी आदत मनुष्य की आत्मा का नाश करती है। उसे पशु बनाती है। हर कीमत पर बापूजी शराब खोरी को बंद करवाना चाहते हैं। जनता को बचाना चाहते हैं। परिवारों को उजड़ने देना नहीं चाहते। इस बुराई के कारण बापू ने कई साम्राज्यों को मिट्टी में मिल जाना पढ़ा व सुना था।

रोम साम्राज्य के पतन का कारण बापू ने मदिरापान बताया था। कृष्ण का यदुवंश भी इसी बुराई के कारण नष्ट हुआ था। बापू के देश में शराब की दुकानों को बिना मुआवजा दिये बंद किया जाना था। लेकिन दुर्भाग्यवश बापू का नारा लगाकर शराब के ठेकेदार सत्तारुढ़ बनकर जनता को करोड़ों के मालिक बन कर खुले आम लूट रहे हैं। आजादी के पचपन वर्षों के पश्चात भी स्वास्थ्य वर्धक पेयों पर गंभीरतापूर्वक ध्यान नहीं दिया जा रहा है। घटिया-सदोष मनोरंजनों पर अंकुश लगाया नहीं जा रहा है। शराब बिक्री के परमिट लाखों रुपयों का रिश्वत लेकर दिये जा रहे हैं। राजनेताओं को चुनाव फण्ड के नाम पर शराब-विक्रेता करोड़ों रुपये देते जा रहे हैं। परमिट धारी भी करोड़पति बनते जा रहे हैं। शराब की बोतलों में जहरीली शराब डाल कर बेची जा रही है। प्रतिदिन लोग उसे पीकर मरते जा रहे हैं। अहिंसा के देवता बापू के देश में मूक पशुओं यानी गायों-बैलों, भेड़-बकरियों को काट कर मांस भक्षण किया जाना बंद नहीं हुआ है। बापूजी को पुनर्जन्म लेना होगा। ●

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति द्वारा संचालित हिन्दी परीक्षा, फरवरी-2004 के

हिन्दी सुबोध, प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, भाषा-भूषण, भाषा-प्रवीण में पुरस्कार प्राप्त छात्र

हिन्दी–सुबोध

विन्दु वी.एन.
प्रथम पुरस्कार
मैसूर

ज्योति वी.एस.
तृतीय पुरस्कार
पेरेसंद्र

लावण्या सी हिरेमठ
पंचम पुरस्कार
हुबली

हिन्दी–प्रथमा

एम.जी.पवित्रा
प्रथम पुरस्कार
बेंगलोर

रंजिनी के
द्वितीय पुरस्कार
बेंगलोर

तेजस्विनी जी
तृतीय पुरस्कार
बेंगलोर

हिन्दी–मध्यमा

शीला शिदलिंगप्पा महाजपेट
चतुर्थ पुरस्कार
राणेबेन्नूर

हिन्दी–उत्तमा

स्वाति
प्रथम पुरस्कार
बीदर

हिन्दी–उत्तमा

चंपाश्री एन.
द्वितीय पुरस्कार
अरसीकेरी

नेत्रावती एस.एम.
चतुर्थ पुरस्कार
बेंगलूर

नसीरा बेगम
पंचम पुरस्कार
होसपेट

हिन्दी भाषा–भूषण द्वितीय खण्ड

नूर शाबा
प्रथम पुरस्कार
बेंगलूर

जी.एस.शालिनी
द्वितीय पुरस्कार
बेंगलूर

कमानी चंद्रशेखर राव
तृतीय पुरस्कार
बेंगलूर

हिन्दी भाषा–प्रवीण उत्तरार्ध

के.एन.नागचंद्रिका
प्रथम पुरस्कार
बेंगलूर

रंजिता एम.
द्वितीय पुरस्कार
बेंगलूर

सौम्या आर.
तृतीय पुरस्कार
बेंगलूर

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति द्वारा संचालित हिन्दी परीक्षा, सितंबर-2004 के

हिन्दी सुबोध, प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, भाषा-भूषण, भाषा-प्रवीण में पुरस्कार प्राप्त छात्र

हिन्दी–सुबोध

विन्दु ए.
प्रथम पुरस्कार
बेंगलूर

फिलोमिना जी.
द्वितीय पुरस्कार
बेंगलूर

जीत राजपुरोहित
तृतीय पुरस्कार
बेंगलूर

वी.कार्तिकियन
चतुर्थ पुरस्कार
बेंगलूर

हिन्दी–सुबोध

ज्योति शंबुलिंगप्पा वड्डट्टी
पंचम पुरस्कार
गदग

हेच.ए. विद्या उत्तरे
प्रथम पुरस्कार
पोन्नमपेट

हिन्दी–प्रथमा

श्वेता एस.एल.
तृतीय पुरस्कार
बेंगलूर

एस. रवी
चतुर्थ पुरस्कार
बेंगलूर

हिन्दी–प्रथमा

हरीश जे.
पंचम पुरस्कार
बेंगलूर

पवित्रा
प्रथम पुरस्कार
गुरुमटकल

हिन्दी–मध्यमा

सन्तोष
द्वितीय पुरस्कार
हुमनाबाद

चेतना पी.टी.
तृतीय पुरस्कार
बेंगलूर

हिन्दी–मध्यमा

प्रकृति एस.एन.
चतुर्थ पुरस्कार
बेंगलूर

हिन्दी–उत्तमा

वाणी बी.
प्रथम पुरस्कार
बेंगलूर

ए. सुस्मिता
तृतीय पुरस्कार
बेंगलूर

प्रिया एम.
चतुर्थ पुरस्कार
बेंगलूर

हिन्दी भाषा–भूषण द्वितीय खण्ड

रम्या टी.एन.
प्रथम पुरस्कार
बेंगलूर

के.एस.भावना
द्वितीय पुरस्कार
बेंगलूर

राघवेंद्रा टी.एन.
तृतीय पुरस्कार
बेंगलूर

हिन्दी भाषा–प्रवीण उत्तरार्ध

प्रेरणा बी.के.
प्रथम पुरस्कार
बेंगलूर

एस.सुहासिनी
द्वितीय पुरस्कार
बेंगलूर

रूपा एम.
तृतीय पुरस्कार
बेंगलूर

कर्नाटक के हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासकार–डॉ0 एम.एस.कृष्णमूर्ति 'इन्दिरेश'

–डॉ0 विद्याश्री-महाराजा कालेज-मैसूर

हिन्दी में मौलिक चिन्तन और लेखन कार्य आधुनिक युग की विशिष्ट उपलब्धि है। काव्य, कहानी, उपन्यास, आलोचना, शोध और अन्यान्य साहित्यिक विधाओं में कर्नाटक के हिन्दी लेखकों की देन विशेष उल्लेखनीय हैं। कर्नाटक के हिन्दी लेखकों ने बहुत कम उपन्यास लिखे हैं। कर्नाटक में, हिन्दी में मौलिक उपन्यास लिखनेवालों में सर्वप्रथम हैं, उडुपि के 'श्री लक्ष्मीनारायण किणी'। आपका एक मात्र सामाजिक उपन्यास है – 'बदलता ज़माना'। कर्नाटक में अब तक हिन्दी के दो ही सामाजिक उपन्यास हैं। वे हैं – श्री लक्ष्मीनारायणजी का 'बदलता ज़माना' और डॉ0 एम.एस.कृष्णमूर्तिजी का 'परशुराम की बहनें'।

कर्नाटक के सर्वप्रथम और एकमात्र मौलिक हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासकार है–डॉ0 एम.एस.कृष्णमूर्ति 'इन्दिरेशजी'। आप मैसूर विश्वविद्यालय, मानसगंगोत्री के स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन तथा अनुसन्धान विभाग के पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष थे। अब तक आपने हिन्दी में तीस से भी अधिक कृतियों की रचना की है, जिसमें हिन्दी के चार उपन्यास और एक कहानी संग्रह भी शामिल है। इसके अलावा कन्नड़ के प्रसिद्ध कवि कुवेंपु तथा बेन्द्रेजी की प्रतिभा को हिन्दी जगत को परिचित करवाने के उद्देश्य से 'इन्दिरेशजी' ने उन पर पुस्तकें लिखी हैं। इन पुस्तकों के प्रकाशन से कर्नाटक की गरिमा और भी बढ़ गयी है। इतना ही नहीं हिन्दी से कन्नड़, कन्नड़ से हिन्दी शोध निबन्धों को अनुवाद कर आपने दक्षिण-उत्तर में साहित्य-सेतु का काम किया है।

अब तक 'इन्दिरेशजी' के चार उपन्यास प्रकाशित हैं। इनमें से 'अपराजित', 'ज्योतिकलश' और 'रागकानडा'–ऐतिहासिक उपन्यास हैं और 'परशुराम की बहनें'–सामाजिक उपन्यास है। कर्नाटक के सर्वप्रथम मौलिक हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासकार 'इन्दिरेशजी' ने कर्नाटक की संस्कृति तथा उसकी ऐतिहासिक गौरव - गरिमा की संपन्नता को अपनी कृतियों के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर अनप्राणित करवाने का एक सराहनीय प्रयास किया है।

ऐतिहासिक रचना की प्रेरणाः-

गुरु विद्यारण्यजी के एक रिश्तेदार संकप्पय्या विजयनगर साम्राज्य में युद्ध मंत्री के रूप में प्रख्यात थे। 'इन्दिरेशजी' उस संकप्पय्या के वंशज हैं। वेदांत एवं दर्शन के लब्ध-प्रतिष्ठित विद्वान तथा विजयनगर साम्राज्य की प्रतिष्ठापना के प्रणेता विद्यारण्यजी की जीवनी से प्रेरणा पाकर 'इन्दिरेशजी' ने एक विद्वान, सन्यासी जिसने राजनीति के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य संपन्न किया था, उसे व्यक्त करने की अभिलाषा से उपन्यास की रचना कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

इनके उपन्यास 'अपराजित' और 'ज्योतिकलश' दोनों विजयनगर साम्राज्य से संबंधित ऐतिहासिक उपन्यास है।

1. अपराजित–

'अपराजित', इन्दिरेशजी का प्रथम उपन्यास है। यह कर्नाटक की पृष्ठभूमि में लिखित ऐतिहासिक उपन्यास है। 'अपराजित' में विजयनगर साम्राज्य संस्थापन के पूर्व के एक लोकवीर राजकुमार कुमारराम का जीवन तथा उसके बलिदान की कथा है।

कुमारराम के पिताजी राजा कंपिल अपने बेटे राम के लिए एक लड़की देखने गया था। लेकिन उस सुन्दर युवती के रूप - रंग यौवन पर आकृष्ट होकर रत्ना को छोटी रानी बनाकर उसे ले आता है। रत्ना राम पर आशिक है और राम के न मानने पर उस पर झूठा इल्ज़ाम लगाती है। राम पर सुल्तान से मिलकर हमला करती है। राम की हत्या हो जाती है। अपने परिवार को बर्बाद करती है।

युद्ध की ऐतिहासिक घटनाओं के विवरण में व्यक्त सेनाबल, देश-विदेश से राम के शौर्य और औदार्य की ख्याति सुनकर आये हुए वीर, विद्वान और कलाकारों का नाम तथा वर्णन से लेखक के ऐतिहासिक अध्ययन की गहराई का पता चलता है। 'इन्दिरेशजी' की प्रथम कृति ही इतनी श्रेष्ठ निकली कि उसे केन्द्र सरकार का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

2. ज्योतिकलशः-

'अपराजित' उपन्यास की अगली कड़ी 'ज्योतिकलश' है। इसमें विजयनगर साम्राज्य की संस्थापना करनेवाले विद्यारण्य के अथक परिश्रम एवं प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व का सफल चित्रण है। महामात्य बने सन्यासी का जीवन हमारे राष्ट्र की संस्कृति के उन्नत आदर्श का चित्र प्रस्तुत कर रहा है। वेदभाष्य लिखनेवाले सायणाचार्य विजयनगर साम्राज्य के दंडनायक भी थे। युद्ध क्षेत्र में क्लान्त हो लौटने पर घर

में वीणा बजाकर अपनी कलान्ति मिटानेवाले कलावन्त कहाँ मिलेंगे ? 'सर्वदर्शन संग्रह' लिखनेवाले माधव अर्थात् विद्यारण्य एक योद्धा, विलक्षण मंत्री एवं सर्वसंग परित्यागी सन्यासी हैं। उनकी कुटिया में एक जगह राजनायक बैठे हैं तो दूसरी ओर दर्शन पर होनेवाली चर्चा को लिपिबद्ध करनेवाले लिपिक। इन सब ज्योतिकलशों से भरा उपन्यास 'ज्योतिकलश' सचमुच एक ज्योतिकलश है। हिन्दी उपन्यास को एक नया आयाम देनेवाला है।

3. रागकानडाः-

'रागकानडा' कर्नाटक के एक अल्पज्ञान किन्तु महान् कलाकार सौरसी तथा उसकी पत्नी छिटाई की कहानी है। 'छिटाई वार्ता' हिन्दी की विख्यात् प्रेमाख्यान है। इसकी विलुप्त कड़ियों को जोड़कर लेखक ने एक अत्यंत कलात्मक उपन्यास प्रस्तुत किया है। सारा उपन्यास कलात्मकता से महकता है। इसमें चित्रकला है, स्थापत्य है, संगीत है। नायक सौरसी वीणावादन पटु है। प्राणियों और पक्षियों को भी बेसुध करनेवाला कलाकार है। नायिका भी वीणावादन पटु है। कर्नाटक की वैणिक परंपरा की जीवंत व्याख्या है- यह उपन्यास। गोपाल नायक, अमीर खुसरो, अलाउद्दीन, रामदेव आदि सजीव चरित्रों एवं वातावरण से भरा यह उपन्यास मध्ययुगीन इतिहास का रत्न दर्पण है। अलाउद्दीन एक नृशंस सुल्तान होते हुए भी एक कला रसिक एवं सहृदय के रूप में आता है। अलाउद्दीन का यह चित्रण एकदम नवीन है। वातावरण के निर्माण में लेखक को अद्‌भुत सफलता मिली। भाषा मुहावरेदार और सरस है।

सामान्य उपलब्धियाँ:-

'अपराजित', 'ज्योतिकलश' और 'रागकानडा' इन तीनों में मिलनेवाली सामान्य उपलब्धियाँ है –

1. यवनों के आक्रमण के कारण देश आक्रांत होना,
2. हिन्दू देव-मंदिरों को दिनदहाड़े तोड़ना,
3. हिन्दू राजाओं के आपसी बैर के कारण यवनों को एक जुट होकर रोका नहीं जाना,
4. स्वार्थी व्यक्ति यवनों से मिलकर अपनी पवित्र भूमि को दुर्बल करना,
5. सुल्तान का बेरहमी से कर वसूल करना जिससे दक्षिण के राजाओं की स्थिति दुर्बल होना,
6. सुन्दर महिलाओं का अपहरण और उनपर अत्याचार आदि।

इसके अतिरिक्त तीन उपन्यासों की युगीन परिस्थितियाँ समान है और तीनों ऐतिहासिक उपन्यासों में निम्नलिखित 'सामान्य समस्याएँ' परिलक्षित होती हैं –

1. धार्मिक समस्याएँ
2. यादवी कलह
3. कन्यापहरण
4. बहुपत्नित्व
5. आर्थिक समस्याएँ
6. दासियों की समस्याएँ तथा
7. धर्म परिवर्तन की समस्याएँ

प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना पर उपन्यास लिखना एक कठिन कार्य होता है। पद-पद पर इतिहास की रक्षा करनी होती है। उपन्यासकार 'इन्दिरेशजी' ने अपने तीनों ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक व्यक्तियों तथा ऐतिहासिक घटनाओं को भली-भाँति निर्वाह किया है। तीन उपन्यासों में कल्पना का योग उतना ही लिया है जितना कि मूल घटना को बदल न सके और कथावस्तु की यथार्थता सन्देहास्पद न बन जाय। उनके उपन्यासों में जो घटनाएँ व्यक्त हुई हैं वे उसी काल से सम्बन्धित हैं।

भाषा शैली:-

'इन्दिरेशजी' के भाषा सरल, सुबोध और सुगम्य है। यवन पात्रों की भाषा में उर्दू, फारसी और अरबी शब्दों का तथा हिन्दू पात्रों की भाषा में संस्कृत शब्दों का समुचित प्रयोग हुआ है। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया गया है। संयुक्त वाक्य या लम्बे-लम्बे वाक्यों का प्रयोग नहीं हुआ है।

निष्कर्ष:-

'इन्दिरेशजी' की हर एक उपन्यास का उद्देश्य महान् है, 'इन्दिरेशजी' ने अधिक ऐतिहासिक उपन्यास ही लिखे हैं। इसका कारण यह है कि वे भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम अध्यायों को जनता के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहते हैं। इसीलिए उन्होंने इतिहास के उन्हीं प्रसंगों को चुना जो देश के गौरव के सूचक हैं और साथ ही सामान्य जनता के लिए प्रेरणाप्रद चरित्रों के विविध गौरवशील तत्त्वों को प्रकाशित कर विश्व-प्रेम, भ्रातृत्व, नैतिकता और चरित्र गरिमा को प्रतिष्ठित करना उनका उद्देश्य रहा है। 'इन्दिरेशजी' के उपन्यास को केंद्रीय हिन्दी निदेशालय की प्रशस्ति, बाबू गंगाशरणजी का पुरस्कार और उत्तर-प्रदेश के सौहार्द सम्मान भी प्राप्त हैं।

अन्ततः कर्नाटक में ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र में अपनी रचनाओं के द्वारा 'इन्दिरेशजी' ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य को विशिष्ट योगदान दिया है।

नये साल का अकिंचनवाद

–वी.आर.परमार "हँसमुख"

हर साल नया साल आता है और काल चक्र पूरा होते ही चला जाता है, इसमें नया क्या है, यह मेरे जैसे अकिंचन की समझ से कोसों दूर है। खगोल शास्त्री अक्सर बयानवाजी करते नहीं थकते हैं कि भानु अरबों वर्ष पुराना है। जब भानु इतना पुराना है तब हर साल एक जनवरी कों उसका प्रताप नूतन कैसे हो जाता है, यह पुनः समझ से परे ही नहीं अकिंचनवाद को जन्म देता है। जब सूरज-चाँद नहीं बदलता तब उस अदती जिन्दगी के बदनियत इंसान में यह कूबत कहाँ से आगई कि वह हर साल साल दर साल साल बदलनें में महारथी हो गया ? साधुवाद इस इंसान को !!

गिरगिट रंग बदलता है, साँप कैंचुली छोड़ता है, आदमी पाला बदलता है, ऐसी दैवयोग घटनाएँ तो देखी-परखी है और समझ में भी आती है। लेकिन पूरा का पूरा भरापूरा साल कैसे कुछ ही क्षणों में बदलजाता है, पुनः मेरे जैसे असंख्य नोबल पुरस्कार प्राप्ति योग्य इंसान के भेजे में नहीं घूमता है ? भाई ऐसी गूढ़-रूढ़ बातें भेजे में घुसेगी भी कैसे। नोबल पुरस्कार प्राप्ति योग्य जो ठहरे ? भाई बड़ा पुरस्कार कोई बाजारू है, जो हर किसी को आड़ी टेढ़ी कविता-कहानी लिखने पर मिल जाए। अरे इसके लिए चाहिए कड़ी मेहनत और पक्का इरादा। कमबख्त यही तो एक मात्र कमी है हम हिन्दु देश के इंसानों में। मेहनत करने से कतराते हैं और पलपल इरादा बदलते हैं, और फिर बैठे बैठे ख्याली पुलाव पकाते रहते हैं। भाई साहब जब ऐसा ही है तो फिर काहे का नया साल और काहे का पुराना !!

सुना है आजकल चमचावाद अकिंचनवाद का बड़ा सहायक सिद्ध हो रहा है। कहावत है ना-सारी दुनिया एक तरफ और जोरू का भाई एक तरफ। ठीक इसी कहावत को चरित्रार्थ करता है चमचावाद। सारी जिन्दगी की सच्ची मेहनत एक तरफ और कुछ दिनों की चमचागिरी एक तरफ। यदि आपके पास सब कुछ शुभ शकुन है और केवल जी हजूरी न करने का अपशकुन है तो आप हर साल साल दर साल नया साल मनाते मनाते मर जाएँगे; लेकिन आपको महान करकमलों से पुरस्कार तो दूर उनके चंद्रमुख से धुत्कार भी नसीब नहीं होगी। फिर मेहनतकश इंसान के लिए नये साल की मुबारकबाद जले पर नमक छिड़कने सी है। जुगजुग जियो नयासाल और साल के दिन हो एक हज़ार !!

क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवाँ तथा जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान का दंभ भरने वाले इस हिन्दुस्तान के बारे में सत्य का उद्‌घाटन यह है कि यह बहाने बाज लोगों का बहाने बाज देश है। बहाने हमारी रग का अहम् हिस्सा है। यहाँ हर नाकाम के पीछे बहाना सीना ताने खड़ा रहता है। पूछा जाता है कि - हे हिन्दवासियों एक सौ दस करोड़ दो पाँव के प्राणियों में कोई एक भी माई का लाल ओलम्पिक खेलों में गोल्ड मेडल के लिए धमाल नहीं मचा सका ? बहाना होता है "हम तो धमाल मचाना चाहते थे लेकिन कमाल की बात यह है कि हमारे मैदान और कोच अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के नहीं है ? फिर दूसरा प्रश्न आसमान से टपकता है-भैया इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का क्यों नहीं बनाया गया ? बहाना आसमान से टपक कर खजूर पर अटकता है- बनायें जाने के प्रयास हुए, लेकिन ये बने ही नहीं ? तब प्रश्न उठता है कि पिछले छप्पन साल में कड़ी मेहनत और पक्का इरादा वृत्त लेने का कमबक्त कोई साल अभी तक आया ही नहीं ? यदि ऐसा साल अभी तक नहीं आया तब आने वाला साल कौन-सा भाड़ फोड़ देगा ? और यदि भाड़ फूट भी गई तो कौन सी भड़भूँजे की दुकान चल पड़ेगी। दूकान तो उन्हीं रिश्वतखोरों की चलेगी ? साधुवाद नूतन वर्ष !!

फिर भी साहब आशावादी लोग निराश नहीं होते हैं। नये साल का पहला दिन धूमधाम से मनाते हैं। नये साल का स्वागत रात भर जगकर तन-मन-धन से करते हैं और फिर वो सोते हैं तो जब उठते हैं तब नया साल पुराना हो जाता है। फिर पुराने साल के दिनों को लोग अपनी पुरानी घिसी पिटी आदतों के सहारे ना-नूकुर

कर काटते हैं। सत्य कहें तो करते क्या हैं खुद-ब-खुद कर जाते हैं। दिन कटते कटते महीना गुजर जाता है। महीना कटते कटते साल गुजर जाता है और देखते ही देखते फिर आ धमकता है नया साल और फिर लोग जोशखरोश के साथ बाँटने लगते हैं– नये साल की बधाइयाँ और दिल खोल के देते हैं मुबारक बाद !!

मेरे इस दकियानुसी चिन्तन पर मेरे इष्ट मित्र मुझे नापसंद करते हैं। शायद यही कारण कि पिछले सालों से एक भी इष्ट मित्र ने आगे आ कर नये वर्ष का बधाई कार्ड नहीं भेजा है। मायूस होकर जब मैंने इसकी लिखित शिकायत एक अंतरंग दोस्त से की, तो उन्होंने बेरंग जवाब भेजा। जिसका मजनून कुछ इस प्रकार था–"भाई हँसमुखजी, आपकी शिकायत वाजिब है; लेकिन क्या करें मजबूरी है। अरे तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि नये साल की बधाई तो या तो बराबरवालों को अथवा ऊपर वालों अथवा पैसे वालों अथवा करिश्मावालों को ही दी जाती है ना और आप ठहरे एक शिक्षक और ऊपर से व्यंग्यकार !! हँसमुखजी नीम चढ़े करैलें की कड़वाहट भला कौन इष्ट मित्र सहन करेगा !! इस पाक जवाब के बाद मैं जब भी इकतीस दिसम्बर की मध्यरात्रि को अकिंचनवाद में डूबता हूँ तो मेरे साथ बेचारा कथाकथित पुराना साल भी मृत्युशैया पर लेटा लेटा अकिंचनवाद में डूब जाता है। खबरचियों से पता चला है कि कथाकथित पुराना साल घड़ी की सुई को एकटक देखता यही सोचता है कि कब बारह बजे और मैं कब पुराना हो जाऊँ। पुराना होने वाला साल नये साल के आगमन पर तरस खाता है। आँसू बहाता है। क्योंकि उसने पूरे तीन सौ पैंसठ दिन इस बेरहम दुनिया को देखा है। लालची लोगों के कर्म को भोगा है। उसने पल पल देखा है कि किस प्रकार इस स्वार्थी दुनिया के लोग उगते सूरज को नमन् करते हैं और अस्त होते सूरज को धुत्कारते हैं; नकारते हैं !! धन्य हो नया साल !!

हर साल की भाँति हर साल इकतीस दिसम्बर आएगा और ठीक मध्यरात्रि को एक महान साल गुजरता जाएगा और दूसरे नये नये महान सालों की पौ फूटती रहेगी। प्रति वर्ष साल के जन्म-मरण का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की गणित में गणना। तब से हर साल साल दर साल इकतीस दिसम्बर की मध्यरात्रि को पुराना साल गुजर जाता है और नये साल का आगमन हो जाता है। साल जो गुजर रहा है, उसने सबको कुछ न कुछ दिया लेकिन लोग उसके गुजर जाने के गम में दो टूक आँसू तक नहीं बहाते हैं। जबकि आनेवाले साल जिसने कभी कुछ भी नहीं दिया है उसकी खुशी में होशो हवाश खो बैठते हैं। वाह रे होशो हवाश उड़ाने वाला साल, तेरी जय हो !

नये साल के आगमन पर दोस्त लोग अपने चहेतों को नये साल पर ढ़ेरों बासी बधाइयाँ देते हैं और फटारवे फोड़ते नजर आते हैं। मानों उनके चहेतों के ही भागीरथी प्रयास से नये साल का मुँह देखने को मिला हो ? कुछ लोग नूतन वर्ष की खुशी में नशा करते हैं और सड़कों पर झूम झूम गाते हैं–लो आया नया साल। मानों इसके पहले कोई साल आया ही नहीं हो ? पश्चिमी संस्कृति सभ्यता में पले-पढ़े बड़े लोग तो हद ही कर देते हैं। ये कथाकथित धनवान लोग होटलों में आयोजित केबरा डाँस में होश हवाश खो कर नाचने के लिए इतनी रकम खर्च करते हैं जितने में एक हज़ार गरीबों का पेट पल जाए। इस रात्रि को नाचने के लिए ऐसे मरते हैं मानों साल के तीन सौ चौसठ दिन अयोग्य हों और केवल यही तीन सौ पैंसठवे दिन की मध्यरात्रि ही पश्चिमी सभ्यता झलकाने-चमकाने के लिए बनी हों। बहारे लटक मटक झटक सृजन नव वर्ष तेरा भी जवाब नहीं !! अतः खिदमत में अर्ज हैं–

श्रीमान नये सालजी, सुनो पुराने साल का बुरा हालजी।
श्रीमान बुराई मौज मनाती, रही, सच्चाई का हुआ बुरा हालजी॥

जीवन का उत्सव मनाती स्त्री डॉ0 सरोजिनी 'महिषी'

–डॉ0 उर्मिल सत्यभूषण, नई-दिल्ली

"वर्तमान सूचना और संचार के युग में जबकि महिला सबलीकरण के ढोल पीटे जा रहे हैं, नारी विमर्श एक बड़ा मुद्दा बनकर उभर रहा है। संसद सहित जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को आरक्षक देने की बात पर बहस छिड़ रही हो ऐसे समय में नारी को पुरुष से अपनी ऐसी पूजा कदापि नहीं करवानी जिसमें कि उसे मूक प्रतिमा की तरह जड़वत बनी रहकर अपनी व्यथा और पीड़ा को व्यक्त करने का अधिकार भी न मिल सके"

ये विचार व्यक्त किये डॉ0 सरोजिनी महिषी ने जब स्त्री उत्सव 2004 में पश्चिम साहित्य परिषद दिल्ली ने उन्हें पश्चिम सम्मान 2004 अर्पित किया ! यह सम्मान ऐसे विद्वान को दिया जाता है जो नारेबाज़ी, फतवेबाज़ी और गुटबंदी के जालों में उलझे बगैर साहित्य, संस्कृति, शिक्षा और समान सेवा के माध्यम से चुपचाप जीवन और जगत को सुंदर बनाने में प्रयास रत रहता है। शिक्षा साहित्य राजनीति और समाज सेवा में अनवरत सक्रिय भूमिका निभाती डॉ0 महिषी ने पूरी लगन और निष्ठा से जीवन को उत्सव बनाया और उसका उत्सव मनाया।

तीस के दशक में धारवाड़ (कर्नाटक में जन्मी प्रतिभावान पुत्री सरोजिनी ने जल्दी जल्दी शिक्षण प्रशिक्षण की सीढ़ियाँ तय कर शिक्षा जगत में प्रवेश किया। मुम्बई विश्वविद्यालय से प्रथम स्थान प्राप्त कर बी.ए. एवम एम.ए. संस्कृत की डिग्रियाँ प्राप्त की। कर्नाटक विश्वविद्यालय से लॉ तथा पी.एचडी की। बाद में हिन्दी में साहित्यरत्न किया। आठ भाषाओं की ज्ञाता डॉ0 महिषी हिन्दी के लिए प्रतिबद्ध रह कर उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सेतु का कार्य करती रही हैं। वह संसदीय हिन्दी परिषद की फाऊँडर चेयरपर्सन है और हर वर्ष संसद में सितंबर में राष्ट्रभाषा समारोह मनाकर सभी विद्वानों और संस्थाओं को राष्ट्रभाषा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की याद दिलाती हैं।

युवावस्था में ही अपने पैतृक कुटुम्ब का भार भी इनके कंधों पर आ पड़ा। स्वयं अविवाहित रह कर उन पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी लगन और निष्ठा से निभाया। अपने भाई बहनों को ऊँची शिक्षा के सोपानों पर ले जाकर उनके जीवन को सुव्यवस्थित किया किन्तु उन्होंने अपने अस्तित्व को भुलाने या मिटाने के बजाय उसकी अलग पहचान बनाई। अपनी उर्जा को कई क्षेत्रों में लगा कर अपने व्यक्तित्व का विकास किया और यह सिद्ध कर दिया कि एक औरत जब संकल्पित चेतना को जागृत कर सबला बनती है तो कितना कुछ कर गुज़रती है।

बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी डॉ0 सरोजिनी महिषी के विभिन्न कार्य-क्षेत्र हैः–

शिक्षाः– सांगली महाराष्ट्र में महिषीजी वैलिंग्टन कॉलेज में प्रवक्ता बनीं। 1955-62 में कर्नाटक विश्वविद्यालय में लॉ कालेज में लॉ की प्रवक्ता रहीं। अब उनके निर्देशन में धारवाड में एक प्रायमरी स्कूल, एक हाईस्कूल और एक स्त्री प्रशिक्षण कॉलेज चल रहा है। 15 वर्ष तक आप बच्चों और महिलाओं की पत्रिका की सम्पादक रहीं। आपने एक आयुर्वेदिक कॉलेज और अस्पताल भी खोला।

साहित्यः– कन्नड़, हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी में चालीस के करीब विभिन्न विषयों की पुस्तकें लिखी और कई पुस्तकों का अन्य भाषाओं में अनुवाद भी किया। ज्ञानपीठ द्वारा पुरस्कृत डॉ0 के.वी. पुट्टप्पा एवम डॉ0 डी.वी. गुंडप्पा की पुस्तकों का कन्नड़ से हिन्दी में काव्यानुवाद किया।

समाज सेवाः– महिलाओं और बच्चों के कई संगठनों में चेयरमैन बनी। स्टेट सोशियल वेल्फेयर बोर्ड कर्नाटका की ज़ोनल मैम्बर रहीं। गर्ल गाईडज़ की स्टेट कमिशनर रहीं। हिन्दोस्तान समाचार हिन्दी न्यूज़ एजेन्सी की चेयरमैन रहीं और कौंसिल फार कोआपरेशन इन्द एन.आर.आई. कंट्रीज़ की चेयर पर्सन भी रहीं।

राजनीतिः– 1962-80 और 1984-90 में धारवाड़ से लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुईं। 1966-69 में प्रधान मंत्री इंदिरागांधी के साथ अटैच्ड डिप्टि मिनिस्टर (इन्चार्ज आफ एटोमिक एनर्जी स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूशनज़ और पब्लिक रिलेशन्ज़) बनीं। 1969-74 में टूरिज़्म, एविऐशन और मोट्रियालोजी के लिए राज्यमंत्री बनीं।

1974-76 में कानून, न्याय और कम्पनी आफीजर्ज़ की केन्द्रीय मंत्री रहीं।

इसके अतिरिक्त लोकसभा और राज्यसभा की कई जायंट सिलेक्ट कमेटियों की प्रधान और कई अन्यों की सदस्य सुश्री महिषी ने देश विदेश की कई यात्रायें कीं वे अमेरिका, यूरोप और आफ्रीकी-एशियाई देशों में भारत की छवि सुधारने हेतु गईं।

ग्रामविकास के अंतर्गत कपार्ट (CAPART) की उपप्रधान रहकर कार्य किया। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के राष्ट्रीय आयोग की सक्रिय सदस्य बनकर कार्यरत रहीं तथा बाद में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की उपप्रधान बनकर कार्य करती रहीं। हर क्षेत्र में उन्होंने सफलता के कीर्तिमान स्थापित किये। संस्कृत वाङ्गमय की महापंडित ज्योतिषविद्या की ज्ञाता वक्र्तृता कला में निपुण श्लोक गायन में सिद्धहस्त कानूनी सलाहकार, शिक्षक साहित्यकार, कुशल राजनेता, स्त्री जाति का गौरव ओजस्विनी, तेजस्विनी नारी डॉ0 सरोजिनी महिषी को हमारा शत शत नमन। हम कामना करते हैं कि ऐसी स्फूर्तिदायक, शक्तिशाली, न्यायप्रिय विदुषी एक बार पुनः राजनीति में सक्रिय भूमिका ग्रहण करें और देश, जाति तथा मानवता के कल्याण हेतु जनजन का मार्ग प्रशस्त करें। पश्चिम साहित्य परिषद् उन्हें सम्मानित कर गौरवान्वित हुई।

श्री टी. के. हंचाटे – हिन्दी प्रचारक, मुधोल, बिजापुर जिला

श्री टी.के. हंचाटेजी का जन्म सन् 1952 को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा निजी गाँव लोकापुर में और उच्च शिक्षा मुधोल में हुई। आपने एम.ए. (हिन्दी) तथा बी.एड्.की उपाधियाँ अन्नामलै विश्वविद्यालय से प्राप्त की हैं। सन् 1978 में आपकी नियुक्ति सरकारी पाठशाला में हिन्दी अध्यापक के रूप में हुई। उसके पूर्व सन् 1970 में हिन्दी प्रचार संघ की तरफ से प्रारम्भिक और उच्च परीक्षाओं के विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ाते थे। तब से अब तक हिन्दी प्रचार-प्रसार कार्य में अपने को लगा दिया है। आप हाल ही में प्रधानाध्यापक के रूप में सेवारत हुए हैं। साथ ही हिन्दी प्रचार काय भी अबाध रूप से चलाते आ रहे हैं। कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के वरिष्ठ प्रचारकों में आपका नाम श्रद्धा से लिया जाता है। आपकी अविरत सेवा को परिलक्षित कर अनेक संस्थाओं ने पुरस्कृत किया है। आपने सैकडों विद्यार्थियों को हिन्दी उपाधि दिलवाकर उन्हें हिन्दी अध्यापक के तौर पर सेवारत भी करवाया है। आपकी सेवा को पहचानकर समिति की कार्यकारिणी समिति ने आपको "पं0 रामेश्वर दयाल दुबे" एक हजार नकद पुरस्कार से सम्मानित किया है। आपकी सेवा को बिजापुर जिले में याद किया जाता है। आपकी हिन्दी सेवा अविस्मरणीय है।

श्रीमती सलीना एस. पीटर, हिन्दी प्रचारिका, हुबली, धारवाड जिला

श्रीमती सलीना एस. पीटर जी का जन्म सन् 1948 को हुआ। आपकी शिक्षा दीक्षा हुबली में हुईं। जब आप सन् 1972 में हिन्दी भाषा प्रवीण परीक्षा में उत्तीर्ण हुई तब से हिन्दी प्रचार-प्रसार कार्य में लगी रहीं। सन् 1984 में स्थापित गीता हिन्दी विद्यालय के तत्वावधान में प्रारम्भिक और उच्च परीक्षाओं के लिए प्रति सत्र में सैकड़ों विद्यार्थियों को तैयार करती आ रहीं हैं। आरम्भिक दशा में पनपता पौधा आज पीपल पेड़ के समान आपका हिन्दी विद्यालय सारे शहर में मशहूर है। कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की वरिष्ठ प्रचारिकाओं में आपका नाम आदर से लिया जाता है। आपके गीता एजुकेशन सोसाइटी के अन्तर्गत एक और लता हिन्दी विद्यालय भी चलता है। आपने अपने हिन्दी विद्यालय में हिन्दी सिखाने हेतु कितनी ही गरीब हिन्दी शिक्षित महिलाओं को स्थान दिया है। आप पति-पत्नी और बच्चे सभी निस्वार्थ भाव से हिन्दी की सेवा करने में और हिन्दी प्रचार प्रसार में लगे हुए हैं। आपकी हिन्दी के प्रति निष्ठा को देखकर समिति की कार्यकारिणी समिति ने आपको सुश्री बी.एस.शांताबाई पुरस्कार स्वरूप तीन हजार नकद प्रदान किया है। आपकी सेवा सराहनीय है।

श्रीमती डी. शीलवतीबाई, हिन्दी प्रचारिका, कुरुगोडु, बल्लारी-जिला

श्रीमती डी. शीलवतीबाई जी का जन्म सन् 1943 को आंध्र प्रदेश के कर्नूल जिला आदोनी तालुक हब्बडम् नामक गाँव में हुआ। आपकी शिक्षा दीक्षा तेलुगु माध्यम में हुई। अतएव सन् 1964 में आपकी नियुक्ति तेलुगु भाषाध्यापिका के रूप में हुई। सन् 1978 में जब आपने राष्ट्रभाषा प्रवीण परीक्षा पास की तब से हिन्दी प्रचार-प्रसार कार्य में अपने को समर्पित किया। कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की प्रारम्भिक और उच्च परीक्षाओं के लिए छात्रों को तैयार करती आ रहीं हैं। समिति की वरिष्ठ प्रचारिकाओं में आपका नाम उल्लेखनीय है।

सन् 2001 में आप अध्यापक पद से निवृत्त होने पर भी आपने हिन्दी प्रचार-प्रसार में हिन्दी की सेवा करने में पूर्व जैसी ही लगी हुई हैं। आज भी कुरुगोडु गाँव में घर-घर जाकर हिन्दी सीखने की प्रेरणा देती हैं, और बच्चों को हिन्दी सिखाकर परीक्षा में बैठा रहीं हैं, आपमें सराहनीय उत्साह है। आज भी आपके मन में शक्ति लगाकर समिति के लिए सेवा करने की भावना तीव्र है। आप प्रशंसा की पात्र हैं। आपकी इस निस्वार्थ भावना को पहचान कर समिति की कार्यकारिणी समिति ने आपको सुश्री बी.एस. शांताबाई पुरस्कार तीन हजार नकद के साथ पुरस्कृत किया है।
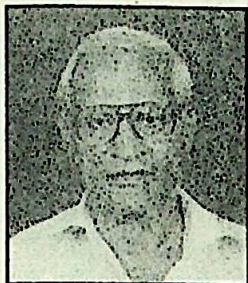
श्री केशवराव गुंडेराव करकाले, हिन्दी प्रचारक, बीदर

श्री केशवराव गुंडेराव करकाले का जन्म बीदर जिले में खेरड़ा नामक गाँव में एक किसान परिवार में हुआ था। आपका झुकाव बचपन से ही हिन्दी के प्रति अधिक था। आपने हिन्दी के लिए अलग-अलग स्कूलों के छात्रों को हिन्दी सिखाकर परीक्षा के लिए सैकड़ों विद्यार्थियों को तैयार किया है। आप बीस साल से हिन्दी प्रचार प्रसार में लगे हुए हैं। आप बीदर जिले के गाँव-गाँव घर-घर में घूमकर हिन्दी का प्रचार कर रहें हैं। आप समिति के हितचिंतक हैं। आपकी हिन्दी सेवा को ध्यान में रखकर आपको सम्मानित किया गया है।

श्रीमती लीलावती, हिन्दी प्रचारिका, बेंगलोर

श्रीमती लीलावती हिन्दी प्रचारिका आपकी उम्र लगभग पचास वर्ष के करीब है। आपने राष्ट्रभाषा प्रवीण तथा हिन्दी साहित्य रत्न परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर सैकड़ों विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए तैयार किया है। आपने कुछ वर्ष भारती विद्यालय में हिन्दी अध्यापिका का कार्य किया है। अब 20 वर्षों से अधिक श्री राजराजेश्वरी विद्या मंदिर में हिन्दी अध्यापिका के रूप में सेवा प्रदान कर रहीं हैं।

विद्यालयों से हटकर आप घर के आस-पास के बच्चों को भी बड़े चाव से हिन्दी का ज्ञान देती हैं। आपका झुकाव ईश्वर-भक्ति, योग, ध्यान, भजन, कीर्तन आदि धार्मिक प्रवृत्ति में ज्यादा रहने पर भी आप पच्चीस सालों से निरन्तर हिन्दी का प्रचार प्रसार करती आ रहीं हैं। आप अनेक हिन्दी सम्मेलनों में भाग ले चुकी हैं। आप अनेक धार्मिक प्रतिष्ठानों से जुड़ी हुई हैं। हिन्दी प्रचार-प्रसार में आपका सहयोग उल्लेखनीय है। आपकी हिन्दी सेवा के लिए आपको सम्मानित किया गया है।
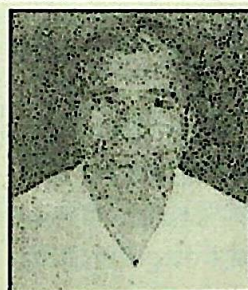
श्री गणपति सत्यनारायण भट्ट, हिन्दी प्रचारक, मुनवल्ली, बेलगाम-जिला

आपका जन्म कारवार जिले के होन्नावर तालुक के गाणगेरे नामक गाँव में 1953 को हुआ था। आप आध्यात्मिक परिवार में रहने के कारण आपको वेद और संस्कृत का अच्छा ज्ञान है। आपने हिन्दी प्रवीण के साथ हिन्दी एम.ए. परीक्षा भी उत्तीर्ण किया है। आपका ध्यान आध्यात्म की ओर अधिक रहने पर भी आपका झुकाव हिन्दी प्रचार प्रसार की ओर अधिक है। आप 20 वर्षों से कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति द्वारा हिन्दी प्रचार प्रसार का कार्य कर रहे हैं। आप कई धार्मिक संस्थानों से जुड़े रहने पर आपकी उत्तम सेवा के लिए आपको उत्तम मार्गदर्शी, उत्तम शिक्षक आदि नामों से सम्मानित किया गया है। आपने धर्माचार्य के रूप में अत्यन्त प्रभाव पूर्ण कार्य किया है। आप आगे भी हिन्दी प्रचार प्रसार कार्य को बनाये रखना चाहते हैं। आपकी हिन्दी सेवा के लिए आपको सम्मानित किया गया है।

श्री बसीर अहमद अ. बागवान, हिन्दी प्रचारक, नालतवाड़, बिजापुर-जिला

श्री बसीर अहमद अ. बागवान हिन्दी प्रचारक का जन्म 1965 में हुआ है। आपने हिन्दी प्रवीण पदवी परीक्षा हिन्दी में बी.एड्. पास करके बिजापुर जिले में स्थित अलग अलग स्थानों पर हिन्दी अध्यापक और हिन्दी प्रचारक के तौर पर सराहनीय सेवा कार्य किया है। आप पन्द्रह सालों से हिन्दी प्रचार प्रसार में लगे हुए हैं। आपके परिश्रम से आप 2002 से श्री बसवेश्वर हैस्कूल, नालतवाड में हेड मास्टर के पद पर सेवारत हैं। इस पद पर व्यस्त रहने पर भी आपने हिन्दी प्रचार कार्य को नहीं छोड़ा। आपने सैकड़ों छात्रों को हिन्दी सिखाकर, हिन्दी प्रचार के लिए तैयार किया है। आप आगे भी हिन्दी प्रचार प्रसार कार्य को बनाये रखना चाहते हैं। आपकी हिन्दी की सेवा के लिए आपको सम्मानित किया गया है।

श्रीमती सुधा एस. बीलगी, हिन्दी प्रचारिका, हुबली, धारवाड-जिला

आप धारवाड-जिले में स्थित नवनगर हुबली नामक स्थान पर निवास कर रहीं हैं। आप हिन्दी बी.ए., बी.एड्. परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर 15 सालों से हुबली में हिन्दी का प्रचार कर रही हैं। प्रति सत्र के लिए काफी विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए आपने तैयार किया है। आपके विद्यार्थियों को उत्तमा परीक्षा में स्वर्णपदक तक प्राप्त हुए हैं।

आजकल आप हिन्दी प्रचार के साथ-साथ ज्ञानसुधा हिन्दी विद्यालय हुबली की संचालिका के रूप में तथा रोटरी इंग्लिश मीडियम स्कूल, नवनगर हुबली में हिन्दी अध्यापिका के तौर पर कार्यरत हैं। हाईस्कूल स्तर के वाक्-स्पर्धा प्रतियोगिता में आपके विद्यालय को अनकों पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आपकी हिन्दी सेवा के लिए आपको सम्मानित किया गया है।
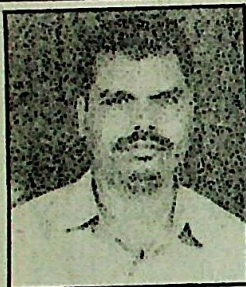
श्री एस.बी. गुडगेरी, हिन्दी प्रचारक ,हरपनहल्ली,दावणगेरे-जिला

श्री एस.बी.गुडगेरी हिन्दी प्रचारक की उम्र चालीस के करीब है। आपने हिन्दी में एम.ए., बी.एड्. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के तुरन्त बाद हिन्दी प्रचार का कार्य शुरु किया है। आप पन्द्रह वर्षों से लगातार अधिक से अधिक संख्या में विद्यार्थियों को हिन्दी सिखाकर हिन्दी परीक्षाओं में बिठाते आ रहें हैं। आप फिलहाल टी.सी.हेच. कालेज हरपनहल्ली में हिन्दी अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। आप हरपनहल्ली क्षेत्र के आस पास गाँवों के बच्चों को आर्थिक मदद देकर हिन्दी सिखाते हैं। आपका हिन्दी प्रेम सराहनीय है। आप निःस्वार्थ भाव से हिन्दी की सेवा और हिन्दी प्रचार प्रसार का कार्य कर रहे हैं। आगे भी आप हिन्दी प्रचार कार्य बनाए रखना चाहते हैं। आपकी सेवा को ध्यान में रखकर आपको सम्मानित किया गया है।

श्री नागेश .ए. यत्नाल, हिन्दी प्रचारक, गुलबर्गा

श्री नागेश .ए. यत्नाल जी का जन्म बिजापुर जिले के सिंदगी तालूक के कोरवार नामक गाँव में 1960 को हुआ। आपने बी.ए., बी.एड्. की उपाधि प्राप्त की है। इसके अलावा इलाहाबाद के हिन्दी साहित्य सम्मेलन से "साहित्य रत्न" तथा हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद से "वाचस्पति" परीक्षाएँ पास की हैं। आप सन् 1984 से हिन्दी का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। समिति की प्रारंभिक और उच्च परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार कर हिन्दी की निःस्वार्थ सेवा कर रहे हैं। संप्रति गुलबर्गा प्रौढ़शाला के हिन्दी अध्यापक पद पर कार्यरत हैं। आपकी सेवाओं को परिलक्षितकर कई संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है। समिति के वरिष्ठ प्रचारकों में आपका नाम उल्लेखनीय है। आपकी सेवाओं को देखकर आपको सम्मानित किया गया है।

श्रीमती धर्माबाई, हिन्दी प्रचारिका, अरसीकेरे, हासन-जिला

श्रीमती धर्माबाई हिन्दी प्रचारिका का जन्म 1970 में हुआ था। आपकी 35 वर्ष की उम्र है। आपने हिन्दी एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण कर बहुत छोटी उम्र से ही हिन्दी के प्रचार प्रसार का कार्य शुरु किया। आपने हिन्दी के साथ साथ, सिलाई भी सीखी है इसकी शिक्षा भी छात्राओं को देतीं हैं। आजकल आप क्राफ्ट टीचर के रूप में सेवा कर रहीं हैं। साथ में हिन्दी परीक्षा के लिए काफी संख्या में विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए तैयार कर रही हैं। आपकी विभिन्न तरह की सेवा के लिए आपको सम्मानित किया गया है।

श्रीमती पी.एम.के.गीतांजली, हिन्दी प्रचारिका, बल्लारी

श्रीमती पी.एम.के.गीतांजली हिन्दी प्रचारिका, बल्लारी की रहने वालीं हैं। आपकी उम्र तीस वर्ष के लगभग है। आपने हिन्दी की दक्षता प्राप्त कर करीबन 15 वर्षों से हिन्दी का प्रचार प्रसार कर रहीं हैं। आप प्रति सत्र में काफी बच्चों को परीक्षा के लिए तैयार करतीं हैं। आजकल आप बल्लारी में अंग विकलांग बच्चों की शिक्षिका हैं। आप उन्हें हर तरह के ज्ञान के साथ-साथ हिन्दी भी सिखाती हैं। आपके बहुत से छात्र भाषा प्रवीण उत्तरार्ध की पदवी लेकर हिन्दी प्रचार प्रसार का कार्य भी कर रहें हैं। आपने बहुत ही कम उम्र से हिन्दी का प्रचार प्रसार शुरु किया था। आपकी हिन्दी सेवा के लिए आपको सम्मानित किया गया है।

श्रीमती डी.जे. गायत्री, हिन्दी प्रचारिका, हुलियार, तुमकूर जिला

आपका जन्म तुमकूर जिले के हुलियार नामक गाँव में हुआ है। आपकी 47 वर्ष की उम्र है। इस उम्र में आपने अनेकों उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। आपने एम.ए., बी.एड्. हिन्दी प्रवीण, अंग्रेजी, कन्नड़ टंकण कला और संगीत की शिक्षा भी प्राप्त की है। आप अनेक संस्थानों, प्रतिष्ठानों में सदस्य के रूप में कार्य कर रही हैं। आपकी अनेकों उपलब्धियों के कारण आपको अनेकों पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आप कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की आजीवन प्रमाणित प्रचारक सदस्या हैं। आप बीस वर्षों से हिन्दी प्रचार प्रसार में लगी हुई हैं। सम्प्रति आप टी.आर.एस.आर.गर्ल्स हैस्कूल हुलियार में मुख्य शिक्षिका के रूप में सेवा प्रदान कर रही हैं। आपकी सेवा को ध्यान में रख कर आपको सम्मानित किया गया है।

गिरिधर मालवीय, **पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद**

सुश्री बहन बी.एस.शांताबाई, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के 31वें दीक्षांत समारोह का आपका निमंत्रण प्राप्त हुआ, तदर्थ अनेकानेक धन्यवाद। विगत पचास वर्षों से कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति जिस निस्वार्थ भाव से हिन्दी के प्रचार प्रसार में अनवरत संलग्न है वह आप सबके सद्प्रयास का परिणाम है। मैं आप सबको तथा कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति को इसके लिए बधाई देता हूँ।

मुझे विश्वास है कि आपका दीक्षांत समारोह भव्य तो होगा ही साथ ही हिन्दी प्रचारकों का सम्मान कर यह अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल होगा। मैं इस दीक्षांत समारोह के सफलता पूर्वक सम्पन्न होने के लिए अपनी हार्दिक शुभ-कामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सद्भावनाओं सहित

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल

बाबूलाल गौर,

प्रसन्नता का विषय है कि कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति द्वारा 31वें पदवीदान समारोह का आयोजन चामराजपेट(बेंगलोर) में आयोजित किया जा रहा है।

हिन्दी सेवा समिति द्वारा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में विभिन्न स्तरों पर आयोजित हिन्दी विषयक परीक्षायें अहिन्दी भाषियों में हिन्दी साहित्य के साथ-साथ व्याकरण विषयक ज्ञान बढ़ाने में भी सहायक है। कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये निस्वार्थ भाव से जो कार्य किये जा रहे हैं उससे हिन्दी का गौरव बढ़ा है।

इस अवसर पर उत्तीर्ण होने वाले छात्रों और सम्मनित होने वाले हिन्दी प्रचारकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

संदेश

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी — **राज्यपाल, कर्नाटक**

प्रिय शांताबाई जी, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के 31वें दीक्षांत समारोह का आपका निमन्त्रण पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद। मुझे इस समारोह में भाग लेकर प्रसन्नता होती, परन्तु पूर्व निश्चित कार्यक्रमों के कारण मैं 19 ता. को बंगलोर से बाहर था। कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति ने पिछले वर्षो में अत्यंत उल्लेखनीय सेवा हिन्दी के प्रचार और प्रसार की दृष्टि से की है। इसके लिये समिति के पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। आशा है आप सकुशल है।

शुभकामनाओं सहित,

S.C.JAMIR — ***GOVERNOR OF GOA***

I am happy to know that the Karnataka Mahila Hindi Seva Samithi is holding its 31st Convocation on 19th December, 2004 at Bangalore.

I send my best wishes on this occasion.

अश्विनी कुमार वैष्णव — **सचिव, पूर्व प्रधानमंत्री**

श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बंगलोर द्वारा 31वें हिन्दी पदवीदान समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

श्री वाजपेयीजी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति बंगलोर के योगदान की सराहना की है तथा हिन्दी पदवीदान समारोह की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

जसवन्त सिंह — **नेता प्रति पक्ष, राज्य सभा**

मुझे यह जानकर खुशी है कि कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलोर, पिछले पचास वर्षों से राष्ट्रभाषा हिन्दी का दक्षिण भारत में प्रचार-प्रसार करती आ रही है। क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग के साथ-साथ हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर, निष्काम भाव से उसके विकास में सहायता प्रदान करना ही आपकी सच्ची सेवा सिद्ध होगी।

31वें हिन्दी पदवीदान समारोह के अवसर पर आपको व समिति के सभी सदस्यों को समारोह के सफल आयोजन की शुभकामनाओं सहित।

जी.सी. मलहोत्रा — **महासचिव, लोक सभा**

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलूर अपना "इकतीसवां दीक्षांत समारोह" आयोजित करने जा रही है और इस अवसर पर मेधावी छात्रों और हिन्दी प्रचारकों का विशेष सम्मान भी किया जा रहा है।

आज के छात्र ही भारत के भावी कर्णधार हैं। अतः छात्रों की उन्नति और व्यक्तित्व के विकास के लिये समिति द्वारा किया जा रहा यह आयोजन अत्यंत प्रशंसनीय है। आशा है विगत वर्षों की भांति भविष्य में भी यह समिति अपनी इस भूमिका को कर्मठता से जारी रखेगी।

मैं "इकतीसवें दीक्षांत समारोह" की सफलता की कामना करता हूँ।

अनन्तराम त्रिपाठी — **प्रधान मंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा**

महोदया,

इकतीसवाँ पदवीदान समारोह का आमंत्रण पत्र मिला। धन्यवाद। दीक्षान्त समारोह की सफलता की हृदय से कामना करता हूँ।

डॉ0 महेश चन्द्र — **महामंत्री, सांस्कृतिक गौरव संस्थान, नई दिल्ली**

आशा है कि आयोजन भव्य और सफल रहा होगा, कृपया बधाई स्वीकारें।

प्रो. सूरज भान सिंह, **पूर्व अध्यक्ष, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, प्रोफेसर (भाषाविज्ञान), केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली**

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति से मेरा संपर्क चालीस वर्ष से भी पुराना है जब मैं केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से हिंदी पत्राचार पाठ्यक्रमों के अनेक कार्यक्रमों के लिए आपके यहाँ आता था और बाद में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के अध्यक्ष के रूप में कई बार आपकी संस्था से जुड़ा। आपकी संस्था के निस्वार्थ हिंदी सेवाकार्यों और विकासपरक दृष्टिकोण से मैं हमेशा बहुत प्रभावित रहा हूँ। जिस गति से आपने अपने विभिन्न कार्यक्रमों का बहुमुखी विकास और विस्तार किया, पाठ्यक्रमों को अधुनातन रूप प्रदान किया और परीक्षार्थियों की संख्या में वृद्धि की उसका समस्त श्रेय आपको और आपके कर्मठ कार्यकर्ताओं को जाता है।

मैं इस दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करने वाले सभी छात्रों का अभिनंदन करते हुए उनकी उज्जवल भविष्य की शुभकामना करता हूँ और यह भी कामना करता हूँ कि आपकी संस्था दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करे।

सी. महाबल नायक **अ.सचिव, हिन्दी प्रचार समिति, उडुपि (रजिस्टर्ड)**

हर्ष की बात है कि आपकी हिन्दी सेवा समिति 31 वाँ पदवीदान समारोह दिनांक 19-12-2004 को मना रही है। आपकी समिति भी दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की तरह हिन्दी प्रचार व प्रसार की अच्छी सेवा कर रही है। मैं पदवीदान समारोह की सफलता की कामना करता हूँ और उपाधियाँ पानेवाले सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ।

समिति के सभी पदाधिकारियों और कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ।

चन्दूलाल दुबे **पूर्व हिंदी-विभागाध्यक्ष, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़**

कर्नाटक की ही, कन्नड़ और हिंदी की विदुषी डॉ0 महिषी इस बार महिला सेवा समिति के पदवीदान समारोह में दीक्षांत भाषण दे रही हैं जो मणिकांचन संयोग है। कई बार हम अपने ही घर के लोगों को विस्मृत कर देते हैं। देर से आये दुरुस्त आये, अब तो अपने स्नातकों को कन्नड की प्रखर प्रभावी वक्ता डॉ0 सरोजनी जी की ओजस्वी वाणी के श्रवण का लाभ मिलेगा। कन्नड़ साहित्य की ख्यात लेखिका और भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी की जिज्ञासू साहित्यकार सरोजनी जी सही अर्थ में दोनों भाषाओं को जोड़ने वाली, सेतु हैं।

दीक्षांत समारोह की सफलता चाहता हूँ।

डॉ0 परमानन्द पांचाल **मंत्रीः नागरी लिपि परिषद् राष्ट्रपति के भूतपूर्व विशेष कार्य अधिकारी (भाषाएं)**

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलूर का 31वाँ हिन्दी पदवीदान समारोह 19 दिसम्बर 2004 को आयोजित हो रहा है। हिन्दी और देश के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि दक्षिण में पिछले पचास वर्षों से महिलाओं द्वारा संचालित यह समिति निरन्तर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। यह स्नातक स्तर पर हिन्दी की उच्च परीक्षाओं का संचालन ही नहीं करती, अपितु हिन्दी शिक्षकों को प्रशिक्षण भी देती है। इससे निश्चय ही, कर्नाटक और दक्षिण भारत में हिन्दी लोकप्रिय हो रही है।

मैं कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति के पदाधिकारियों को उनके प्रशंसनीय प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ और दीक्षांत समारोह की सफलता की कामना करता हूँ।

प्रा.सु.मो. शाह **कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे**

संस्था राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार और परीक्षाओं का संचालन करने का प्रशंसनीय कार्य करती है। पुरस्कार प्राप्त और उत्तीर्ण छात्र तथा उन्हें मार्गदर्शन करनेवाले अध्यापक, कार्यकर्ता एवं अधिकारी सबका हार्दिक अभिनंदन।

समारोह की सफलता के लिए हार्दिक शुभेच्छाएँ।

प्रो0 चमन लाल सप्रू **सचिव, जम्मू कश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति**

31 वें पदवीदान समारोह की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें। मैं गत चार दशकों से आपकी संस्था की गतिविधियों को निकटता से देखता आ रहा हूँ। संस्था की चहुँमुखी प्रगति से सारा हिन्दी जगत परिचित है।

बालेश्वर राय — **सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय**

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति दिनांक 19 दिसंबर 2004 को 31 वां पदवीदान समारोह का आयोजन करने जा रही है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार और अध्यापन कार्य में आपकी संस्था विशिष्ट भूमिका का निर्वाह करती आ रही है। प्रसन्नता की बात है कि कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बेंगलूर पचास वर्षों से राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी हुई है। आप जैसे मनीषियों का योगदान स्तुत्य है।

पं. रामेश्वर दयाल दुबे — **कवि, लेखक, साहित्यकार**

बेंगलोर स्थित कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति ऐसी उच्च कोटि की संस्था है जो अपने कार्य कलाप के कारण हिन्दी प्रचार की संस्थाओं में अपना एक उच्च स्थान बना चुकी है। पिछले पचास वर्ष से यह संस्था सम्पूर्ण कर्नाटक प्रान्त में राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार का स्तुत्य कार्य कर रही है। सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि इस संस्था में काम करने वाली सभी महिलाये हैं। निस्वार्थ भाव से सेवा पथ पर चल कर भारत की राष्ट्रीय भावना को दृढ़ बनाने में लगी हैं। उनका त्याग और तपस्या वन्दनीय है। संस्था इतने सुचारू रूप से अपने कार्य कलाप चलाती है, जिसे देखकर केन्द्रीय सरकार के हिन्दी विभाग, तथा प्रान्तीय सरकारे संस्था को अपना सहयोग सा एक पवित्र कार्य मानती है। गण्यमान्य अधिकारी, संस्था की प्रशंसा करते थकते नहीं है।

संस्था दिनोदिन उन्नति करती हुई राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा-कार्य में सफल हो, यही मंगल कामना है।

विष्णु प्रभाकर — **साहित्यकार**

इस बार डॉ0 सरोजनी महिषी जी दीक्षांत भाषण देंगी और हिन्दी प्रचारकों को सम्मानित भी करेंगी। वे बहुत अनुभवी महिला हैं, और इस क्षेत्र में उन्होंने बहुत काम किया है, वे बहुत अच्छी वक्ता भी हैं। निश्चय ही वे समिति का मार्ग दर्शन कर सकेंगी। कर्नाटक सरकार के औद्योगिक मंत्री श्री पी.जी.आर.सिन्ध्याजी पदक और पुरस्कार छात्रों को प्रदान करेंगे। मेरी हार्दिक बधाई सब पुरस्कार प्राप्त वालों को। मुझे आशा करनी चाहिए इस दीक्षांत-समारोह के बाद समिति और अधिक उत्साह के साथ आगे बढ़ेगी। उसका भूतकाल शानदार रहा है। भविष्य और भी सुन्दर रहेगा।

इस क्षेत्र में आप सबके गहरे अनुभव हैं। उनका लाभ न केवल कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति को मिलेगा बल्कि सारे देश में फैले हिन्दी प्रचारकों का मार्गदर्शन करेगा। रचनात्मक कार्य करने वाले ही देश के वास्तविक निर्माता होते हैं। और आशा करता हूँ कि समिति निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ती रहेगी। इस यज्ञ में मैं भी आपके साथ हूँ। एक बार फिर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

सी. जय शंकर बाबू — **संपादक, युग मानस**

पूज्यवर शांताबाई जी, सादर वंदे। आशा है, आप सकुशल हैं। विगत दिनों में नई दिल्ली में संसद भवन में आपके सम्मानित होने का समाचार पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई, हार्दिक बधाई स्वीकार्य हो। आपकी अमूल्य सेवाओं के लिए ऐसे सम्मान तो श्रद्धालुओं के ह्रदय में जागृत होनेवाली आत्मीय भावना ही तो है।

आपके आगामी जन्म दिन के अवसर पर तथा आगामी नव वर्ष 2005 के अवसर पर भी मेरी हार्दिक मंगल कामनाएँ स्वीकार्य हो। योग्य सेवा कार्य हो तो अवश्य निर्देश दीजिए।

कैलाशचन्द्र पन्त — **मंत्री संचालक, मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति**

आदरणीय श्रीमती शांताबाई, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलोर का 31 वाँ पदवीदान समारोह सम्पन्न होने जा रहा है। यह सूचना हिंदी जगत के लिये गर्व का विषय है। आपकी संस्था दक्षिण में हिन्दी प्रचार के लिये जो महत्वपूर्ण योगदान दे रही है, मैं उसका ह्रदय से प्रशंसक हूँ।

डॉ0 पि.के.बालसुब्रह्मण्यन — **अध्यक्ष, भारती यूथ असोसिएशन**

मान्य महोदया, प्रणाम। आपकी समिति के इकतीसवें पदवीदान समारोह का निमंत्रण पत्र प्राप्त। बड़ी प्रसन्नता हुई। आपकी समिति की अनुपम सेवा की उपलब्धि है यह समारोह। समारोह की सफलता की शुभकामनाएँ स्वीकारें।

कुलसचिव — **गुजरात विद्यापीठ**

आदरणीय बहनश्री बी.एस.शांताबाईजी, सस्नेह नमस्कार। इकतीसवाँ पदवीदान समारोह का निमंत्रण मिला। धन्यवाद। कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बेंगलोर ने कर्नाटक प्रदेश में हिंदी प्रचार की जो सेवा की है यह सर्वविदित है। यह जानकर खुशी हुई कि पूर्व सांसद {राज्यसभा} पूर्व केन्द्रमंत्री, संसदीय हिंदी परिषद नई दिल्ली की अध्यक्षा डॉ० सरोजिनी महिषीजी दीक्षांत भाषण करेंगी तथा हिंदी प्रचारकों का सन्मान करेंगी। इस शुभ अवसर पर कर्नाटक सरकार के औद्योगिक मंत्री सन्मान्य श्री पी.जी.आर.सिन्ध्याजी मुख्य अतिथि का स्थान ग्रहण करेंगे। हिंदी प्रचार की दिशा और दशा के बारे में उपयोगी मार्गदर्शन मिलेगा ऐसी श्रद्धा है। समारोह की सफलता के लिये शुभेच्छाएँ स्वीकार करें।

सुधीर टण्डन — **उप महानिदेशक**

प्रिय सुश्री बी.एस.शांताबाई, भारतीय संस्कृति में भाषा सरस्वती रूप में प्रतिष्ठित है। वाणी नारी रूप में इसलिए पूजी जाती हैं क्योंकि नारी के माध्यम से सृष्टि अपने को अभिव्यक्त करती है और भाषा के माध्यम से कला-संस्कृति अपने को। आपकी संस्था द्वारा अहिंदी भाषी क्षेत्र में निःस्वार्थ भावना से हिंदी का प्रचार प्रसार प्रशंसनीय प्रयास है। मैं आपकी संस्था के उज्जवल भविष्य तथा पदवीदान/दीक्षांत समारोह की सफलता की कामना करता हूँ।

हरिहर लाल श्रीवास्तव — **प्रधान मंत्री, काशी सेवा समिति**

आदरणीय दीदी सादर प्रणाम। कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर के 31वें दीक्षांत समारोह तथा पुरस्कार सम्मान वितरण का निमंत्रण प्राप्त हुआ। धन्यवाद। हिन्दी सेवा समिति आप लोगों के सानिध्य में दिनों-दिन प्रगति सोपान पर बढ़ते हुए अधिकाधिक जिज्ञासुओं को हिन्दीमय ज्ञान अमृत पिलाकर उनका जीवन सफल करती रहे, यही हमारी शुभकामना है।

ಡಿ. ವೀರೇಂದ್ರ, ಹೆಗ್ಗಡೆಯವರು — **ಧರ್ಮಸ್ಥಳ**

ಕರ್ನಾಟಕ ಮಹಿಳಾ ಹಿಂದಿ ಸೇವಾ ಸಮಿತಿಯ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿನಿಯವರಿಗೆ,

ನೀವು ಆದರ ಪೂರ್ವಕ ಕಳುಹಿಸಿರುವ ಆಹ್ವಾನ ಪತ್ರಿಕೆ ತಲುಪಿರುತ್ತದೆ.ದಿನಾಂಕ 19.12.2004 ರಂದು ಕರ್ನಾಟಕ ಮಹಿಳಾ ಹಿಂದೀ ಸೇವಾ ಸಮಿತಿಯ 31ನೇ ಘಟಿಕೋತ್ಸವವು ಡಾ|| ರಾಧಾ ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿ ಇವರ ಅಧ್ಯಕ್ಷತೆಯಲ್ಲಿ ಜರುಗಲಿರುವ ವಿಚಾರ ತಿಳಿದು ಸಂತೋಷವಾಯಿತು.

ಹಿಂದೀ ಸೇವಾ ಸಮಿತಿಯ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸುವಲ್ಲಿ ಈ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮವು ಪ್ರೇರಕವಾಗಲೆಂದು ಆಶಿಸುತ್ತೇನೆ.

ನಿಯೋಜಿತ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮವು ಆಮಂತ್ರಿತ ಅತಿಥಿಗಳ, ಗಣ್ಯ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳ ಹಾಗೂ ಹಿಂದೀ ಭಾಷಾಭಿಮಾನಿಗಳ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹ ಸಹಕಾರದೊಂದಿಗೆ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ನೆರವೇರಲೆಂದು ಹಾರೈಸುತ್ತೇನೆ.

ಡಾ. ಎಸ್.ಎನ್.ಸುಬ್ಬರಾವ್ — **ನಿರ್ದೇಶಕರು, ನ್ಯಾಷನಲ್ ಯೂಥ್ ಪ್ರಾಜೆಕ್ಟ್, ನವದೆಹಲಿ**

ಪ್ರಿಯ ಸುಶ್ರೀ ಶಾಂತಾಬಾಯಿ ಅವರೆ,

ಪದವೀದಾನ ಸಮಾರೋಹದ ನಿಮಂತ್ರಣ ಕೈಸೇರಿತು. ಅನೇಕ ಧನ್ಯವಾದಗಳು. ನೀವು ಹಾಗೂ ನಿಮ್ಮ ಜತೆ ಕೈ ಸೇರಿ ಹಿಂದೀ ಪ್ರಚಾರಕ್ಕಾಗಿ ಶ್ರಮಿಸುವ ಎಲ್ಲ ಅಕ್ಕತಂಗಿಯರೂ ಮಾಡುತ್ತಿರುವ ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ರಮವೂ ನಮಗೆಲ್ಲ ಹೆಮ್ಮೆ ತರುವಂತಹ ಹೆಜ್ಜೆಯಾಗಿವೆ. ಈ ಸಾರಿ ಸಮಾರೋಪಕ್ಕೆ ಆತ್ಮೀಯರಾದ ಮೇಧಾವಿಕಾ ಸರೋಜಿನಿ ಮಹಿಷಿ ಅವರು ಬರುತ್ತಿರುವುದು ಬಹಳ ಸಂತೋಷದ ಸುದ್ದಿ. ಅವರಿಗೆ ನನ್ನ ನಮಸ್ಕಾರ ತಿಳಿಸಿರಿ.

Office of the Karnataka Mahila Hindi Seva Samithi

No.178, IV Main Road, Chamarajpet, Bangalore - 560 018

TIME TABLE FOR THE HINDI EXAMINATIONS FEB-2005

SATURDAY : 12-2-2005 10 A.M. TO 1-00 P.M.	SATURDAY : 12-2-2005 2-00 P.M. TO 5-00 P.M.
1) HINDI UTTAMA I PAPER ಕನ್ನಡ ಉತ್ತಮಾ I PAPER 2) HINDI BHASHA BHUSHAN (I PART) I PAPER 3) HINDI BHASHA BHUSHAN (II PART) I PAPER 4) HINDI BHASHA PRAVEEN (POORVARDHA) I PAPER 5) HINDI BHASHA PRAVEEN (UTTARARDHA) I PAPER	1) HINDI UTTAMA II PAPER ಕನ್ನಡ ಉತ್ತಮಾ II PAPER 2) HINDI BHASHA BHUSHAN (I PART) II PAPER 3) HINDI BHASHA BHUSHAN (II PART II PAPER 4) HINDI BHASHA PRAVEEN (POORVARDHA) II PAPER 5) HINDI BHASHA PRAVEEN (UTTARARDHA) II PAPER

SUNDAY : 13-2-2005 10 A.M. TO 1-00 P.M.	SUNDAY : 13-2-2005 2-00 P.M. TO 5-00 P.M.
1) HINDI SUBODHA (ONE PAPER ONLY) ಕನ್ನಡ ಸುಬೋಧ 2) HINDI PRATHAMA (ONE PAPER ONLY ಕನ್ನಡ ಪ್ರಥಮಾ 3) HINDI MADHYAMA I PAPER ಕನ್ನಡ ಮಧ್ಯಮಾ 4) HINDI UTTAMA III PAPER ಕನ್ನಡ ಉತ್ತಮಾ III PAPER 5) HINDI BHASHA BHUSHAN (I PART) III PAPER 6) HINDI BHASHA BHUSHAN (II PART) III PAPER 7) HINDI BHASHA PRAVEEN (POORVARDHA) III PAPER 8) HINDI BHASHA PRAVEEN (UTTARARDHA) III PAPER	1) HINDI MADHYAMA II PAPER ಕನ್ನಡ ಮಧ್ಯಮಾ 4) HINDI UTTAMA IV PAPER ಕನ್ನಡ ಉತ್ತಮಾ IV PAPER

N.B. : The time for Oral Examination of Bhasha Praveen Uttarardha will be announced at the Examination Centres by the Chief Superintendent on the days of Examinations.

कृपया प्रचारक बन्धु ध्यान दें :-

1) समिति के नियमानुसार जिन केन्द्रों में भाषा प्रवीण उत्तरार्ध परीक्षा के विद्यार्थियों की संख्या कम होगी उन केन्द्रों के विद्यार्थियों को परीक्षा विभाग से निर्धारित परीक्षा केन्द्र पर जाकर परीक्षा लिखनी होगी। निर्धारित प्रवीण उत्तरार्ध परीक्षार्थियों की संख्या दस है। उससे कम होने पर अलग परीक्षा केन्द्र दिया जाएगा। अगर विद्यार्थियों या प्रचारक सूचित परीक्षा केन्द्र में परीक्षा देने के लिए न जायेंगे तो समिति जिम्मेदार नहीं है। मौखिक परीक्षा भी वहीं होगी।

2) प्रचारकों से प्रार्थना है कि वे हर एक प्रवेश पत्र पर, छात्र का नाम, केन्द्र का नाम, परीक्षा की तारीख आदि पूरा जाँचकर छात्रों को दें। अपूर्ण प्रवेश पत्र देने पर छात्रों को होनेवाली असुविधा के लिए समिति जिम्मेदार नहीं।

परीक्षाएँ 12-2-2005 एवं 13-2-2005 को चलेंगी।

प्रधान सचिव

श्रीमती सुधा एस. नीलगी, हुबली श्रीमती धर्माबाई, अरसीकेरे श्रीमती लीलावती, बेंगलोर श्रीमती डी.जे.गायत्री, हुलियार

स्वर्णपदक प्राप्त छात्राएँ

समिति की प्रधान सचिव सुश्री बी.एस.शांताबाई द्वारा डॉ० सरोजिनी महिषीजी का सम्मान

हि.शि.ट्रै. कालेज-हुबली की प्रवक्ता डॉ० शोभा पालंदे द्वारा सम्मान होते हुए
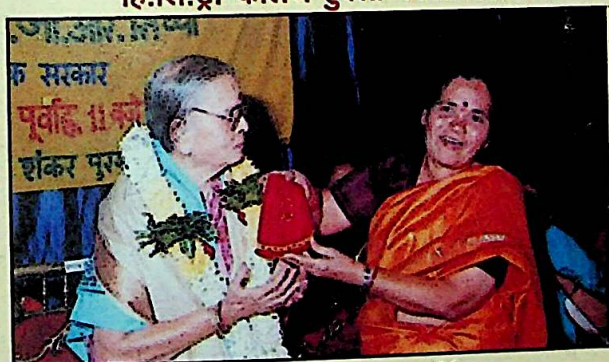
डॉ० (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्ति

सुश्री बी.एस.शांताबाई

श्री एस. नागराज

पदवीदान समारंभ पर समिति की प्रधान सचिव डॉ० सरोजिनी महिषी का स्वागत करती हुई बगल में दिल्ली के कर्नाटक भवन के डी.आर.सी, एस. आर. गारवाडजी की पत्नी श्रीमती गीताजी खडी हैं।

HINDI PRACHAR VANI JANUARY-2005
Reg.No.CPMG/K.A./BGS-97/2003-05 POSTED AT CHAMARAJPET, BANGALORE-18
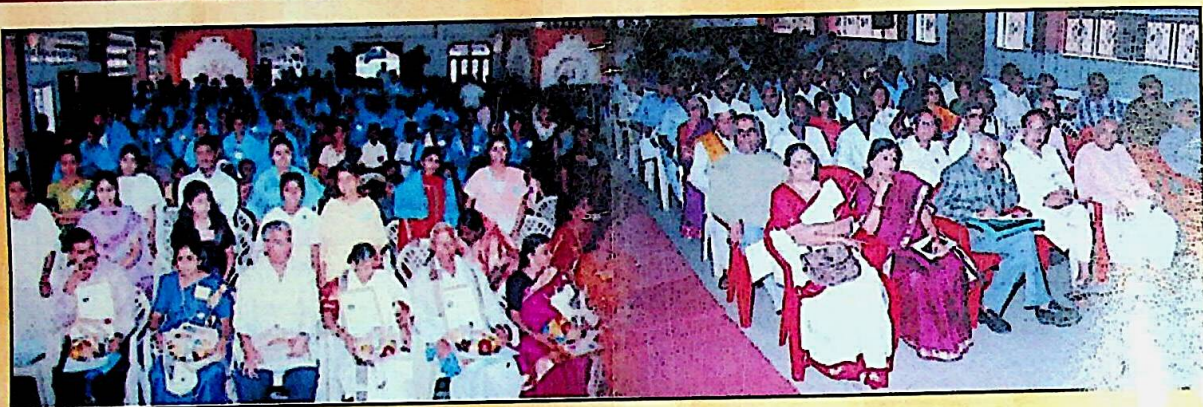
पदवीदान समारंभ पर स्नातक गण, प्रचारक बंधु तथा अतिथि गण दर्शित हैं

मंच पर आसीन समिति के पदाधिकारी गणों के बीच डॉ0 सरोजिनी महिषी

समिति के प्रांगण में डॉ0 सरोजिनी महिषीजी के साथ समिति के कार्यकर्तागण

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलोर की ओर से श्रीमती वी.एस. शांतावाई, एम.ए., द्वारा के.एम.हेच.एस.एस. प्रेस, बेंगलोर-18, में मुद्रित, प्रकाशित एवं संचालित। दूरभाष : 26617777